ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 19 जनवरी 2020 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 19 जनवरी 2020 से 25 जनवरी 2020

माघ कृ. – 10 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 62, अंक 03, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,120 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. बी.एस.ई.बी. पटना में मनाया गया स्वामी श्रद्धानन्द का 93वाँ बलिदान दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा, बिहार एवं आर्य युवा समाज के संयुक्त तत्त्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बी.एस.ई.बी. कॉलोनी, न्यू पुनाईचक पटना 23 के विशाल प्रांगण में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के 93वॉ बलिदान दिवस के अवसर पर 51 कुण्डीय विश्वशान्ति महायज्ञ, आर्य महासम्मेलन सह त्रिदिवसीय चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इस महायज्ञ की ब्रह्मा डा. प्रीति विमर्शिनी जी, आचार्या, पाणिनि महाविद्यालय, वाराणसी, अपनी ब्रह्मचारिणियों के साथ वेद मन्त्रों का सस्वर उच्चारण कर पूरे प्रांगण को गुंजायमान कर भक्तिरस का प्रवाह कर रही थी।

यज्ञोपरान्त उद्घाटन कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री संजीवन सिन्हा, प्रंबध निदेशक, एस.बी.पी. डी.सी.एल., (विद्युत् विभाग) बिहार सरकार, विराजमान थे।

दीपप्रज्ज्वलन एवं डी.ए.वी. गान के बाद आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा के प्रधान डॉ. यू. एस. प्रसाद ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया तथा इस कार्यक्रम की उपादेयता की चर्चा करते हुए शिक्षा के साथ संस्कार देने वाली डी.ए.वी. संस्थाओं की उपलब्धियों को गिनाया।

पदाधिकारियों तथा अतिथियों का केसरियों पगड़ी पहना कर अभिनन्दन किया गया। प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री ने बहुत ही सारगर्भित रूप में विचार एवं ज्ञान दिया जिसे सुनकर श्रोतागण आत्म विभोर हो गए। पाणिनि कला महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा वेदमन्त्रों का वैदिक पाठ अत्यन्त मनमोहक रहा। डी.ए.वी. के धर्माचार्य श्री मनोज शास्त्री एवं श्यामानन्द शास्त्री जी का सुमधुर भजन स्वामी श्रद्धानन्द के कार्यों पर प्रस्तुत हुआ जिसे सुनकर श्रोतागण अधिक आकर्षित हुए।

भजनोपदेशिका के रूप में राजस्थान से सुश्री प्रियंका भारती का भजनोपदेश विद्यार्थियों के लिए प्रभावशाली रहा। तदुपरान्त डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बी.एस. ई.बी. कॉलोनी, पटना के विद्यार्थियों के द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के जीवन एवं कार्यों पर आधारित नृत्य नाटिका की प्रस्तुति हुई जिसने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

उद्घाटन समारोह के अन्त में धन्यवाद ज्ञापन श्री के.के. सिन्हा जी प्रधान आर्य युवा समाज बिहार ने किया।

इस समारोह में लगभग 500 विद्यार्थी 300 शिक्षक शिक्षिकाओं तथा 200 आर्य समाज के सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

दूसरे दिन के कार्यक्रम की शुरूआत यज्ञ–हवन प्रतियोगिता से हुई जिसमें डी.ए. वी के 15 स्कूलों से आए बच्चों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। वहीं शंख ध्वनि एवं वेद मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता में प्रतिभागियों का उत्साह एवं प्रदर्शन देखते ही बन रहा था। विद्वानों का भजनोपदेश हुआ। बच्चों को संध्या तक वैदिक परिवेश में संस्कार मिलता रहा। इस दिन के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय प्रशासनिक सेवा के पदाधिकारी श्री विपिन कुमार सिंह,

शेष पृष्ठ 11 पर

के.आर.एम. डी.ए.वी. नकोदर में महात्मा आनन्द स्वामी निर्वाण दिवस संपन्न

के.आर.एम. डी.ए.वी. कॉलेज, नकोदर में महात्मा आनन्द स्वामी की याद में एक समारोह आयोजित किया गया, जिसमें संस्कृत विषय के छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए एक अनूठी पहल की गई। जो विद्यार्थी संस्कृत विषय अपनाते हैं, उनके लिए महात्मा आनन्द स्वामी संस्कृत प्रोत्साहन योजना' के अन्तर्गत प्रिंसीपल डॉ. अनूप कुमार द्वारा घोषणएं की गई कि संस्कृत विषय रखने वाले विद्यार्थियों को योजना के अर्न्तगत छात्रवृत्ति दी जाएगी। इस वर्ष कॉलेज में संस्कृत के छात्रों को डेढ़ लाख रूपए की छात्रवृत्ति दी गई।

इस मौके पर डॉ. अनूप ने कहा कि महात्मा आनन्द स्वामी ने आर्य समाज से प्रभावित होकर युवावस्था में ही अपना जीवन वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया। उनकी कृतियों में भारतीय संस्कृति पाई जाती है। सन् 1949 में वे संन्यास ग्रहण कर 'महात्मा–आनन्द स्वामी सरस्वती' ने महात्मा जी ने कीनिया, युगांडा तथा तंजानिया आदि का भ्रमण कर वैदिक धर्म का प्रचार किया। संस्कृत भाषा के अध्ययन पर बल दिया

संस्कृत विभाग के प्रमुख डॉ. सलिल कुमार ने छात्रों को संस्कृत विषय को अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर अर्थशास्त्र विभाग के प्रो. डॉ. कमलजीत सिंह भी उपस्थित थे।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 19 जनवरी 2020 से 25 जनवरी 2020

हे सोम! हृदय–कलश में प्रवेश करो

● **डॉ. रामनाथ वेदालंकार**

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरितातिं पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋग् ९.७०.९

ऋषिः **रेणुः वैश्वामित्रः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **जगती**।

● **(सोम)** हे सोम परमात्मन्! **(तू)**, **(वृषा)** वर्षक **(होता हुआ)**, **(देववीतये)** दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, **(पवस्य)** प्रवाहित हो, **(इन्द्रस्य)** आत्मा के, **(हार्दि)** हृदय–रूप, **(सोमधानं)** सोम–कलश में, **(आविश)** प्रविष्ट हो।, **(बाधात्)** बाधे जाने से, **(पुरा)** पहले, **(नः)** हमें, **(दुरिता अति)** पापचरणों से लंघाकर, **(पारय)** पार करदे। **(क्षेत्रवित्)** मार्ग का ज्ञाता, **(विपृच्छते)** विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, **(दिशः)** दिशाओं को, **(आह हि)** बताता ही है।

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करनेवाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय–रूप सोम–कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम–पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी–कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप–भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप–कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप–मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप–ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार–रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछनेवाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा–ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन–पोत भव–सागर में डूबकर नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

आनन्द भगवत् कथा

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में आनन्द भगवत् कथा में महात्मा आनन्द स्वामी ने बताया कि "हे बृहस्पति, परमात्मा, नारायण! आप भक्तों, मनुष्यों को ठीक रास्ते, ठीक नीति पर ले जाते हो और उनकी रक्षा करते हो। जो भक्त अपने–आपको आपके प्रति समर्पित करता है, उस भक्त को पाप छू नहीं पाता। "संसार के मायाजाल को बिछानेवाला वही एक है। संसार के उत्पन्न करने और स्थिति में वही एक कार्य कर रहा है। "वह पुरुष–परमात्मा–नारायण आत्मा के भीतर सदा मनुष्यों के अंगुष्ठमात्र हृदय में निवास करता है। हृदय से, बुद्धि से, मन से उसे पाया जा सकता है। "उसका कोई 'रूप' नहीं है जो आँखों के सामने ठहरे और न आँखों से उसे कोई देख पाता है। वह हृदय में स्थित है। इसलिए जो 'हृदय और मन से' उसे इस प्रकार जानते हैं वे अमृत हो जाते हैं।" **–अब आगे**

दुनिया की जितनी भागदौड़ है वह केवल इसलिए है ताकि हमें सुख मिले और यह सुख उसी प्रभु, परमात्मा, नारायण की शरण ही से मिलता है। यही बात वेद भगवान् भी और उपनिषद् के ऋषि भी कह रहे हैं, और यही बात नारद जी को विष्णु–लोक (हृदय) में ध्यानावस्था प्राप्त करने के पश्चात् प्रभु–प्रेरणा से ज्ञात हुई।

श्वेताश्वतरोपनिषद् के अन्त में पूरे बल के साथ ऋषि ने यह घोषणा की है कि–

यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः।
तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तो भविष्यति ।।6।20।।

"जब लोग चमड़े की तरह आकाश को लपेट सकेंगे तब उस देव–ईश्वर–नारायण को जाने बिना भी दुःख का अन्त होने लगेगा।"

तात्पर्य यह है कि आकाश को चर्म या चटाई की तरह लपेटना असम्भव है; इसी प्रकार परमात्मा को जाने बिना, प्रभु के दर्शन पाने का व्रत लिये बिना, दुःखों का अन्त होना असम्भव है।

श्री सत्यनारायण–व्रत लेने का मतलब यही है कि पूरे आस्तिक बनकर, प्रभु–आज्ञाओं का पालन करते हुए उसी को अपना मित्र बनाकर जीवन–कर्त्तव्य पूर्ण किये जायें। परमात्मा ही एकमात्र सहारा है जो कभी धोखा नहीं देता, हर समय मानव–यात्री के अंग–संग रहता है। उसी को अपनाने, उसी का होकर रहने का व्रत यदि दुनिया के लोग ले लें तो निःसन्देह मानव दुःखों से बचा रहे और सच्चा सुख भी मिल जाये। आज की दुनिया के कष्टों–क्लेशों का सबसे बड़ा कारण यही है कि आज का मानव परमात्मा से, नारायण से विमुख हो गया है और केवल शरीर ही, केवल माया ही उसके सामने है। श्री नारद जी को नारायण ने यही बतलाया कि यदि दुनिया के लोग सत्यनारायण परमात्मा का व्रत ले लें और उसी की कथा–वार्ता सुना करें तो दुनिया सुख का श्वास लेने लगे। इसके बिना मानव–जीवन नष्ट ही होता रहेगा।

श्रोता–महाराज! क्षमा चाहता हूँ एक संशय सामने आ गया है।

वक्ता – क्या संशय आ गया?

श्रोता–भगवन्! बड़े आश्चर्य से देख रहा हूँ कि आजकल बहुधा दुःखी, परमात्मा के भक्त ही दिखाई देते हैं। मैं अपनी कहूँ–मैं जितना अधिक भजन करता हूँ, उतना कष्ट बढ़ जाता है। यह क्यों?

वक्ता–बिना कारण के तो कार्य होता नहीं। जिस संशय की बात आपने कही है, उसका भी कारण है। सबसे पहली बात तो यह है कि भोग सबको भोगने पड़ते हैं। भगवान् राम को भी 14 वर्ष जंगलों में भटकना पड़ा। सीता माता को रावण की कैद में रहना पड़ा। बड़े–बड़े ऋषि–मुनि भी शारीरिक यातनाएँ सहन करते रहे। इसलिए ये भोग तो भोगने ही पड़ेंगे। भक्ति से सहनशक्ति आ जाती है, जो कष्टों–क्लेशों को सुगम बना देती है।

दूसरी बात यह है कि हम भक्ति नहीं करते, दुकानदारी करते हैं। जो दुकानदार है, उसे यदि लाभ होता है तो उसे घाटे के लिए भी तैयार रहना होगा। कभी भजन से सुख मिल गया और कभी दुःख भी मिल गया।

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

सन्तान को देव-पूजक, सदाचारी व यशस्वी बनाएँ

● महात्मा चैतन्यस्वामी

हमारी संस्कृति में गृहस्थाश्रम का मुख्य दायित्व समाज एवं राष्ट्र को सुसन्तान प्रदान करना भी है। अभाग्य से आज इस दिशा में गृहस्थियों द्वारा विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है। न तो बालक के विधिवत् गर्भाधान व सीमन्तोनयन आदि संस्कार ही उपनयन-संस्कार तक कराए जाते हैं और न ही उन्हें उस प्रकार की शिक्षा-दीक्षा दी जाती है। हमारे शास्त्रों में माता को प्रथम गुरु तथा पिता को दूसरा गुरु बताया गया है। आचार्य तो तीसरे नम्बर पर आता है। यह मां-बाप का प्रमुख दायित्व है कि वह अपने बालक को सुसंस्कारों से सुसज्जित करके उसका तथा अपना जीवन सुखमय बनाए। आजकल युवाओं के बिगड़ने व उनके संस्कारी न होने की शिकायत तो बहुत की जाती है मगर इस बात पर चिन्तन नहीं किया जाता है कि उनमें वह बिगाड़ व कुसंस्कार आए कैसे....यदि प्रत्येक मां-बाप बचपन से ही अपनी सन्तान के निर्माण को प्रमुखता दें तो आज भी हमें चरित्रवान् युवा मिल सकेंगे। बालक तो किसी कच्ची मिट्टी के समान होता है। जिस प्रकार हम कच्ची मिट्टी को जैसा चाहें वैसा स्वरूप प्रदान कर सकते हैं ठीक उसी प्रकार यह हमारे अपने हाथ में है कि हम अपनी सन्तान को कैसा बनाना चाहते हैं। यदि गर्भाधान से लेकर उपनयन व वेदारंभ तक के सभी संस्कार विधिवत् कराए जाएं तथा मां अपना दायित्व एक गुरु के रूप में तथा पिता अपना दायित्व एक गुरु के रूप में निभाएं तो कोई कारण नहीं है कि हमारी युवापीढ़ी यूँ दिग्भ्रमित हो सके....हमारे महापुरूषों ने तो यहां तक कहा है कि वे मां-बाप अपनी सन्तान के शत्रु हैं जो उसे संस्कारित नहीं करते क्योंकि ऐसी सन्तान किसी सभा में ऐसे ही शोभायमान नहीं होती है जैसे हंसों के बीच में कोई कौवा बैठा हो....आज कुछ विश्वविद्यालयों के युवा जब देश-विरोधी नारे लगाते हैं तथा देश की सम्पत्ति को जला देते हैं तो हमें बहुत ही अधिक पीड़ा होती है....इसी से उनका पता चल जाता है कि ये किसी संस्कारी मां-बाप की सन्तान तो हो ही नहीं सकती हैं....

मुख्य बात संस्कारों की है। यदि बच्चों को सुसंस्कार दिए जाएं तो जहां वह अपना जीवन सुखी बनाएंगे वहीं दूसरी ओर अपने मां-बाप, परिवार, समाज एवं देश को भी सुखी बनाएंगे। उन्हें अपने मां-बाप, आचार्य, समाज एवं देश अपने प्राणों से भी प्यारा लगेगा। वह इनके विपरीत कुछ अशोभनीय करने की बात तो दूर रही सोच भी नहीं सकेंगे....हम तो यहां तक कहना चाहते हैं कि जो मां-बाप देश व समाज को सुसंस्कारी सन्तान प्रदान करते हैं वे तो पुण्य के भागी बनते हैं और इसके विपरीत जो बिगड़ी हुई सन्तान देते हैं वे महापापी हैं। मां-बाप को चाहिए कि वे अपनी सन्तान को सत्य-असत्य,धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य आदि का ज्ञान भली प्रकार से करा दें। कथा-कहानियों आदि के माध्यम से यह बता देना चाहिए कि देव-पूजा में उन्हें कभी प्रमाद नहीं करना है। सभी महापुरूष हमारे देव हैं उनका तो आदर सत्कार आदि करना ही चाहिए अर्थात् उनकी मान्यताओं के अनुसार ही कार्य करना चाहिए विपरीत नहीं। हमारा राष्ट्र हमारे लिए देव है-राष्ट्रदेवो भव। अपने तन, मन व धन से राष्ट्र-सेवा करने के संस्कार बच्चों में डालने चाहिएँ।

वैदिक साहित्य में बहुत से देवों की चर्चा है उनमें से ये भी हैं-मातृदेवो भव,पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव। अपने मां-बाप, आचार्य तथा आपको उपदेश देकर कृतार्थ करने वाले अतिथियों का भी आदर व सम्मान करना चाहिए क्योंकि ये सब आपके देवता हैं।'पूजा' शब्द का भावार्थ है सत्कार करना। अभाग्य से आज न तो अधिकतम मां-बाप और न ही अध्यापक इस प्रकार के विचार दे पाते हैं और हमारे पाठ्यक्रमों में भी इन बातों का समावेश नहीं के बराबर है।

अपनी सन्तान को जहां भौतिक सम्पदा प्राप्त करने के लिए योग्य बनाना है वहीं उन्हें यह बात गहराई से बताई जानी चाहिए कि उनकी वास्तविक सम्पदा उनका सदाचार होता है। यह एक ध्रुव सत्य है कि दुराचारी कभी भी अपने जीवन में सुखी नहीं हो सकता है। वास्तव में सुख-दुःख का आधार आदमी के सद्विचार व कुविचार ही होते हैं। कुविचारी भले ही स्वयं को कुछ समय के लिए सुखी समझ ले मगर वह वास्तविक व स्थाई सुख से सदा वंचित ही रहता है। वह स्वयं तो सुख,शान्ति तथा आनन्द से वंचित रहता ही है मगर वह अपने परिवार,समाज और देश के लिए भी अन्ततः किसी न किसी प्रकार से दुःखदायी ही सिद्ध होता है। दुराचारी न स्वयं तृप्त रह सकता है और न ही किसी दूसरे को तृप्त कर सकता है। इसके विपरीत सदाचारी संसार में समस्त सुखों को प्राप्त करता है. ..वह स्वयं तो सुखी होता ही है मगर वह अपने सम्पर्क में आने वालों को भी सुख और शान्ति प्रदान करता है। दुराचारी व्यक्ति पर कोई विश्वास नहीं करता है मगर सदाचारी पर सभी विश्वास करते हैं....वह सबका प्रिय होता है....उसे मां-बाप और बड़े लोगों तथा आचार्यों का प्रेम व आशीर्वाद प्राप्त होता है। दुराचारी अपने शरीर का तो नाश करता ही है मगर साथ ही वह अपने मन और बुद्धि को भी विकृत कर लेता है। यह विकृत मन और बुद्धि उसे अन्ततः कहीं का नहीं छोड़ते। तथा वह व्यक्ति सर्वनाश को प्राप्त हो जाता है।

सदाचार वास्तव में है क्या? ,सतामाचारः सदाचारः अर्थात् सत्पुरूषों, श्रेष्ठ जनों के शास्त्र सम्मत आचार एवं सद्विचारों का नाम ही सदाचार है। सदाचार का परिभाषित अर्थ है-'शास्त्रविहित शुभ कर्मों को निरन्तर करना।' इस प्रकार हम देखें तो सदाचार में अनेक बातों का समावेश होता है,जैसे उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय करना, सदा उच्च विचार रखना,उत्तम व्यवहार करना, अपने चरित्र को ऊँचा उठाना,शिष्टाचारी होना, सत्य और धर्म का ही अनुपालन करना तथा परमात्मा पर अटूट श्रद्धा, समर्पण और विश्वास का होना आदि। इसके साथ-साथ अन्य व्यवहारिक बातों का अनुपालन करना भी सदाचार के ही अन्तर्गत आता है। एक बहुत ही सार्थक, सुन्दर तथा उत्तम उक्ति है-'सादा जीवन उच्च विचार।' 'हम जिस भी महापुरुष का जीवन देखें, उन सब में यह विशेषता रही है। सदाचारी पुरुष अपने बाहरी दिखावे की ओर ध्यान नहीं देता, बल्कि अपने अन्तर की ओर ही उन्मुख रहता है। वह बाहर का श्रृंगार करने के स्थान पर अपने आप को भीतर से श्रृंगारित करने के ही कार्य करता है। हमारे नीति ग्रन्थों में सदाचार को ही व्यक्ति का सर्वोत्कृष्ट तथा सर्वोत्तम सौन्दर्य बताया है। सदाचारी व्यक्ति प्रतिक्षण आत्मनिरीक्षण करता रहता है कि मेरे अन्तःकरण पर कोई किसी प्रकार की भी मलीनता न आ जाए... .वह सदा कुंसगति से दूर रहता है....कुंसग से वह ठीक इसी प्रकार डरता रहता है जैसे किसी जहरीले सांप से डरा जाता है। वह जानता है कि सांप का डसा तो भले ही बच भी जाए मगर कुंसग का डसा हुआ सर्वथा बर्बाद हो जाता है....यह जागरूकता ही उसे पग-पग पर बचाती रहती है और वह अपने सदाचार पर किसी प्रकार की भी आंच नहीं आने देता है।

दुराचारी सदा ही दूसरे के सुख से दुःखी होता रहता है....वह इसलिए दुःखी कम होता है कि उसके पास किसी वस्तु का अभाव है मगर दूसरे को वह वस्तु प्राप्त क्यों है,वह इस बात से अधिक दुःखी होता है। क्योंकि उसके मन में दूसरों के प्रति राग और प्रेम नहीं होता है। यदि हो तो वह स्वयं भी सुखी रहे और दूसरों के सुख में भी सुख अनुभव करे।

मां-बाप व आचार्यों को चाहिए कि वे अपने किशोरों के हृदय में एक भावना दृढ़तापूर्वक स्थापित कर दे कि उसे संसार में यशस्वी होकर जीना है। अथर्ववेद की एक सूक्ति है-वयं सर्वेषु यशसः स्याम। अर्थात् हम सब यशस्वी बनें। हमारे आदर्श ग्रन्थों में यशस्वी जीवन को ही वास्तविक जीवन कहा है। गीता में तो यहां तक कह दिया है कि कीर्ति यस्य स जीवति।अर्थात् जिसकी कीर्ति है,वास्तव में वही व्यक्ति जीवित है। इसके विपरीत जिसकी कीर्ति नहीं है वह तो मानो जीते-जी भी मरे हुए के ही समान है। यश व कीर्ति प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को सदा ही नेक कामों के साथ स्वयं को जोड़ना होता है। क्योंकि वे जीवन में सदा ही सतर्क रहेंगे कि हमारे द्वारा कहीं भूल से भी ऐसा कर्म न हो जाए जिससे मेरा, मेरे परिवार का, मेरे नगर का या मेरे देश का नाम कलंकित हो जाए, उसका स्वभाव ही ऐसा बनता चला जाएगा कि उसे कीर्त्ति के बिना अपना जीवन ही फीका लगने लगेगा....

मां-बाप तथा आचार्य यदि अपनी सन्तान तथा विद्यार्थियों को एक यही उपदेश दे दिया करें कि तुम लोगों ने जीवन में यशस्वी बनना है तो संभवतः उनका पूरा जीवन ही पवित्रता से तथा कर्त्तव्य-निष्ठा से परिपूर्ण हो जाएगा जीजाबाई ने शिवाजी को और शिवाजी ने अपनी मां जीजाबाई को यशस्वी बना दिया। महाराज दशरथ और उनकी पत्नियों ने ऐसी सन्तान पैदा की कि उन्होंने पूरे कुल का ही नाम रोशन कर दिया....अर्जुन व सुभद्रा ने अभिमन्यु को और वीर अभिमन्यु ने उनके नाम को यशस्वी बना दिया....आचार्य चाणक्य को उनकी मां ने तथा चाणक्य ने अपने कुल को यशस्वी बना दिया....ऐसे एक नहीं बल्कि सैकड़ों की उदाहरण मिल जाएंगे। वेद में यह भी कहा गया है कि आचार्य वा गुरू अपने शिष्य को और शिष्य अपने गुरू के नाम को यशस्वी करे। ब्रम्हऋषि गुरु विरजानन्दजी ने महर्षि दयानन्द को और दयानन्दजी ने अपने गुरू विरजानन्दजी को यशस्वी बनाया।

वेद में धन के बारे में भी यही कहा गया है कि व्यक्ति का धन उसे यशस्वी बनाए तथा व्यक्ति भी अपने धन से यश की प्राप्ति करे। अपने धन से यश प्राप्त करने का सीधा सा ढंग है कि सुपात्र को उसका दान दिया जाए। दान से व्यक्ति को यश की प्राप्ति होती है....इतिहास में बहुत ही सुप्रसिद्ध घटना है कि महाराणा प्रतापजी जब मुगलों से लोहा लेते-लेते आर्थिक रूप में बहुत ही अधिक अशक्त हो गए तथा अपने सैनिकों को भोजन आदि की व्यवस्था करने में भी समर्थ न रहे तो भामाशाह ने अपना पूरा खजाना उनके चरणों में समर्पित करके सदा-सदा के लिए यश कमा लिया। जब कहीं भी दान की बात आती है तो भामाशाह का स्मरण हो जाता है और जब भी बहुत बड़े दान की चर्चा चलती है तो भी भामाशाह ही स्मरण आ जाते हैं। इतना ही नहीं बल्कि भामाशाह का नाम ही महादान का पर्यायवाची बन गया है....

वेद में एक बहुत ही उत्तम प्रार्थना की गई है-यशो मा प्रतिमुंचताम् अर्थात् मैं संसार से चला भी जाऊँ मगर मेरा यश मुझे पीछे जीवित छोड़ जाए। इतिहास में जितने भी महापुरूष हैं सब भले ही आज शारीरिक रूप में हमारे बीच में नहीं हैं मगर अपने यश के रूप में वे आज भी जीवित हैं और लाखों-करोड़ों वर्षों के बाद भी जीवित रहेंगे. ..अपनी सन्तान को यह बताया जाना चाहिए कि यदि हम अपने यश के बारे में निरन्तर जागरूक रहें तो हम भी अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

महादेव,सुन्दरनगर,जिला मण्डी, हि.प्र.-175018.
मो. 09418053092
ई-मेल : chaitnyamuni@gmail.com

वेदों का आदर्श–अन्योन्याश्रित जीवन–दर्शन का स्वरूप/सार्वभौमिकता

● आचार्य डॉ. बृहस्पति मिश्र

प्रकृति अनन्त व अनादि है। दृश्यमान जगत् इसका एक हिस्सा है। प्रकृति के अंश के रूप में हमें दिखाई देने वाला यह समस्त विस्तार एक चक्र के रूप में प्रवर्त्तमान है। प्रकृति का यह चक्र स्थूल रूप में हमें दिनरात एवं क्रम बदलती ऋतुओं के रूप में दिखाई देता है किन्तु यह चक्र सूक्ष्म रूप में बहुत गहरे स्तर पर प्रकृति के समस्त अंशों को प्रभावित एवं एक दूसरे से सम्बद्ध करता है। प्रकृति के इस अनन्त विस्तार में परस्पर सम्बद्धता को ही अन्योन्याश्रय के रूप में देखा जाता है। अन्योन्याश्रय या सहकार जीवन की जब चर्चा की जाती है तो उसके मूल में यह भावना विद्यमान होती है कि मनुष्य चींटी से लेकर व्हेल तक, जड़ से लेकर जंगम तक विस्तृत प्रकृति का ही एक अंश है। इस प्रकृति के विस्तार में उसका महत्त्व किसी अन्य प्राणी से किसी भी प्रकार से अधिक नहीं है। प्राकृतिक संरचनाओं के कारण उसमें प्रकृति के ही एक तत्त्व बुद्धि का अधिक विकास पाया जाता है। जो अन्य जीवों में विद्यमान विशिष्टताओं के समान ही इसकी एक विशेषता है, अनुपमता नहीं। प्रकृति के अन्य जीवों में भी ऐसी विशेषताएँ प्राप्त होती हैं, जो हमें अनुपम सी प्रतीत होती हैं, किंतु यह विशेषता उसके जीवन रक्षणोपाय के रूप में होती है। इस प्रकार यह समस्त चक्र परस्पर अनुपूरक है। इस विशाल प्रकृति चक्र का गंभीरतापूर्वक आलोडन करने पर इसके अन्तर्निहित अनेक चक्रों का ज्ञान प्राप्त होता है। प्रमुखतया इसे हम पाञ्चभौतिक चक्रों के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। इन पाँच चक्रों में (पार्थिव चक्र, जलीय चक्र, आग्नेय चक्र, वायव्य चक्र, आकाशीय चक्र) अनेक छोटे–छोटे चक्र अन्तर्निहित रहते हैं। जैसे वायु में ऑक्सीजन चक्र, नाईट्रोजन चक्र, कार्बन चक्र आदि। इन प्रमुख पाँच भौतिक चक्रों में सृष्टि में एक चेतना चक्र भी विद्यमान रहता है जो समस्त चेतनावान् संवेदनशील प्राणियों से संबन्धित है। इस चक्र में भी अनेक छोटे–छोटे चक्रों का समावेश पाते हैं–यथा परिवार चक्र, समाज चक्र, कृषि चक्र प्राकृतिक–वनस्पति चक्र एवं जीव–जंतु (अरण्य) चक्र आदि। यहाँ चक्र उस सतत् गतिमान प्रक्रम से है जो अपने आप में विकास एवं संतुलन को समेटे हुए है। जब हम चक्र शब्द का प्रयोग करते हैं तब उसमें यह भी भावना होती है कि इसमें प्रयुक्त प्रत्येक अंश समान महत्त्ववान् है, हम किसी भी अरे की महत्ता को किसी भी अन्य से कम करके नहीं आँक सकते हैं। हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि बैलगाड़ी के पहिए में लगे अरे अथवा मोटर साइकल में लगी तिल्लियों में किसी एक के भी टूट जाने पर इस छोटे से चक्र के भविष्य के प्रति चिन्तित होते हुए सुधार के लिए तुरंत प्रयत्नशील हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार इन चक्रों के सभी घटक एक दूसरे पर आश्रित होकर उपयोगी होते हैं। इन सभी को अपने में समेटे हुए प्रकृति चक्र की स्थिति है। जैसे घड़ी के अंदर विद्यमान अनेक लघु चक्र आपस में परस्पर गति देते हुए स्वयं गतिमान होते हुए घड़ी को संचालित करते हैं। इन छोटे–छोटे चक्रों में यदि एक भी चक्र असन्तुलित होता है तो वह अन्य को भी दुष्प्रभावित करते हुए संपूर्ण घड़ी चक्र को असन्तुलित कर देता है। वैसे ही प्रकृति चक्र द्वारा चलायमान समस्त चक्र एक दूसरे को अनुपूरक गति देते हैं। यदि इनमें से किसी एक चक्र में क्षोभ उत्पन्न होता है तो समस्त सृष्टिचक्र क्षोभित होता है। यह क्षोभ प्रकृति चक्र के समस्त घटकों को प्रभावित करता है। मनुष्य भी इसका अपवाद नहीं होता है। चिन्तन की इस दिशा का व्यावहारिक रूप ही अन्योन्याश्रय जीवन–दर्शन का धरातल है।

सृष्टि के इस विस्तार के प्रमुख तीन घटक जीव मण्डल से सम्बन्धित हैं। इन्हें हम चेतनावान् भी कह सकते हैं। प्रथम–वह चेतना घटक जो गतिशील नहीं अर्थात् वनस्पति, द्वितीय–वे जीवित घटक जो सहज वृत्ति पर निर्भर हैं–कीटाणुओं से लेकर पशुओं तक और तृतीय–महत्त्वपूर्ण घटक है बुद्धि के परम विस्तार की संभावनाओं से युक्त मनुष्य। इन तीनों ही घटकों में संवेदना, बुद्धि एवं शक्ति विद्यमान रहती है, किन्तु अपनी स्थिति, परिस्थिति एवं अवस्था के अनुसार स्तरों में भेद हो सकता है। आधुनिक विज्ञान में विकासवाद के उद्भावक एवं प्रसारक आचार्यों ने जीवों में जिस परस्पर भक्ष्य–भक्षक चक्र की कल्पना की है वह बहुत ही उथले चिन्तन का निष्कर्ष प्रतीत होती है। वस्तुतः परस्पर विरोधी प्रतीत होनेवाले ये तीनों घटक एक दूसरे के अनुपूरक हैं। प्रसिद्ध पर्यावरण विदुषी सरलादेवी (केथरीन मेरी हाइलामन) ने अपनी पुस्तक 'संरक्षण या विनाश' (पृ. 12) में एशली माण्टेगू को उद्धृत करते हुए लिखा है कि "डारविन का जीवन संघर्ष तथा योग्यतम की जीत के विचार अब पुराने हो गये हैं। भक्ष्य=भक्षक चक्र अप्रासंगिक हो गया है। वस्तुतः एक कोषाणु से मानव तक की यात्रा में जीवों का परस्पर माँ और बच्चे का प्राकृतिक सम्बन्ध है। वही सामाजिकता सहयोग एवं परस्पर अवलम्बन की बुनियाद है और प्रजनन की प्रक्रिया में सह जीवन का बीज है।" उनका मानना है कि प्राणी–जगत् का समूह बनाकर रहने के पीछे सह अस्तित्व की भावना ही है। प्रकृति स्वस्थ होड़ और सह अस्तित्व के नियम की नियामिका है। उन्होंने एक अन्य प्रसंग में वर्क होल्कर (पृ. 13) को उद्धृत करते हुए कहा कि "प्रकृति की वही जाति अच्छी तरह टिक सकती है, जो सहयोग की कला जानती है।" (संरक्षण या विनाश, पृ. 12) अन्योन्याश्रय जीवन सृष्टि के जीवों के परस्पर अनुबन्धों पर प्रकाश डालता है। सृष्टि के समस्त आनुषाङ्गिक चक्र जिसमें ऑक्सीजन से लकर वनस्पति, जीवजन्तु तक सभी प्रकृति की विराट् योजना के वे अंग हैं जिनका अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर है। परस्पर यह आश्रयत्व इतना गहरा है कि जब हम प्रकृति पर इस दृष्टि से दृष्टिपात करते हैं तो वायु, जल, स्थावर, जङ्गम, जड़–चेतन जैसे भेद निराधार प्रतीत होते हैं। डॉ. दयानन्द भार्गव ने आधुनिक वैज्ञानिकों को उद्धृत करते हुए आधुनिक चिन्तकों को नवीन दिशा दी है। (वैदिक विज्ञान, पृ. 15) उन्होंने उद्धृत किया कि – "सापेक्षता के सिद्धान्त के कारण विश्व का तानाबाना आज सजीव हो गया है। जिस प्रकार सापेक्षता का सिद्धान्त विश्व को निर्जीव मानने के विरोध में जाता है उसी प्रकार क्वाण्टम सिद्धान्त का पूर्ण तर्क–सम्मत प्रतिपादन चेतना पर विचार किये बिना सम्भव नहीं है। हम यह समझते जा रहे हैं कि पर्यावरण केवल सजीव ही नहीं है बल्कि हमारी तरह समझदार भी है। वटेसन जैसे वैज्ञानिकों ने कहा है कि मुझे कहीं भी प्राकृतिक प्रक्रिया में अव्यवस्थित पदार्थ दिखाई नहीं देता। सभी सजीव पिण्ड स्वयं व्यवस्थित होनेवाली व्यवस्था के अन्तर्गत् हैं अर्थात् बाहर से उन पर कोई व्यवस्था थोपनी नहीं चाहिए। व्यवस्था स्वयं उनमें अन्तर्निहित है। डॉ. फ्रिक जोककापरा ने माना है कि चट्टान सजीव समझदार विश्व का अंग होने के नाते उसके बृहत्तर चेतना की योजना के भागीदार बनते हैं। जिन्होंने चट्टान और वृक्ष में भी चेतना का अनुभव किया है, वे विश्व को इस रूप में नहीं देखते कि उसमें पदार्थ भरे हुए हैं और उन पदार्थों में चेतना है बल्कि इस रूप में देखते हैं कि सर्वत्र चेतना है जिससे सब पदार्थ ओतप्रोत हैं। डॉ. भार्गव लिखते हैं कि क्वाण्टम सिद्धान्त से पूर्व विज्ञान न्यूटन के यान्त्रिक दृष्टिकोण को मानता था। इस यान्त्रिक दृष्टिकोण के अनुसार अवयवों को जोड़–जोड़कर अवयवी का निर्माण होता है। किसी यन्त्र के बनाने की यही प्रक्रिया है, किन्तु बीज से वृक्ष बनने की प्रक्रिया इससे विपरीत है। एक ही बीज से वृक्ष के भिन्न–भिन्न अवयव शनैः–शनैः विकसित होते हैं और इसलिए वे अवयव एक दूसरे से घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध होते हैं। क्वाण्टम सिद्धान्त के बाद विश्व का यही स्वरूप माना जा रहा है। क्वाण्टम का अर्थ है 'ऊर्जा–समूह'। वैज्ञानिकों का मानना है कि पदार्थ केवल परमाणुओं का संयोजन नहीं है अपितु ऊर्जा समूह के ताने–बाने का परिणाम है। (तदेव, पृ. 21) इस एकता मूलक समग्रदृष्टि ने अनेक द्वैतों को समाप्त कर दिया। शरीर और मन के बीच का द्वैत, जड़ और चेतन के बीच का द्वैत कुछ इसी प्रकार का द्वैत है। इन द्वैतों के समाप्त होने से चिकित्सा के क्षेत्र में भी नई दृष्टि आ रही है कि "चिकित्सा किसी एक रोग विशेष की नहीं प्रत्युत पूरे रोगी की होनी चाहिए। भारतवर्ष में आयुर्वेद की यही दृष्टि है। पश्चिम मे भी प्राकृतिक चिकित्सा और होम्योपैथी की चिकित्सा पद्धतियों में यही दृष्टि रहती है।" (वैदिक विज्ञान, पृ. 15) केवल इस रूप में हम पाते हैं कि सृष्टि के समस्त घटक सिर्फ ऊर्जावान् ही नहीं अपितु चेतनावान् भी हैं। यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि जिस प्रकार हमें जीवों में जन्म, वृद्धि, स्थिति, क्षय आदि अवस्थाओं का आभास होता है ठीक उसी प्रकार यह क्रम जड़ माने जानेवाले पदार्थों में भी प्राप्त होता है। पृथ्वी का निर्माण उसकी वृद्धि, स्थिति, क्षय अथवा उसका रुग्ण होना अब केवल आस्था के विषय नहीं प्रत्युत वैज्ञानिक तथ्य हैं। उसी क्रम में हम जल के जीवनचक्र वायु के जीवनचक्र आदि को सार्वभौमिकता में देख सकते हैं। आधुनिक स्थिति पर्यावरण के सन्दर्भ में अन्योन्याश्रय जीवन–दर्शन की सार्वभौमिकता को स्वीकार करते हुए सकारात्मक चिन्तन पर्यावरणविदों के लिए एकमात्र आशा की किरण रह गया है।

''वैदिक चिन्तन और आधुनिक पर्यावरण विज्ञान''
से सभार

मनुर्भव

● डॉ. धर्मवीर सेठी

ऋग्वेद की ऋचा कहती है :

तन्तुं तन्वन्नजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।

अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।। – ऋ 10–53–6

इस सारगर्भित एवं पवित्र मंत्र में परमात्मा अपनी सन्तानों–आत्माओं–को एक ही संदेश देते हैं–मनुष्य बनो।

'इन्सान बनो कर लो भलाई का कोई काम, इन्सान बनो, और उसके लिए उपाय भी बता दिये। प्रथम उपाय है –**'तन्तुं तन्वन्नजसो भानुमन्विहि'** अर्थात् कर्म के ताने–बाने बुनते हुए मुँह सदा परमात्मा रूपी सूर्य के सम्मुख रखो। अर्थात् उसकी आज्ञा का निःस्वार्थ भाव से पालन करो। कबीर जुलाहा थे। इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना के ताने–बाने से वह शरीर रूपी चादर बुनते थे और उन्होंने क्या किया–'दास कबीर जतन ते ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया'। बेदाग, निष्कलंक।

दूसरा उपाय है **'ज्योतिष्मतः पथो रक्ष'** अर्थात् संसार में आगे बढ़ने के लिए ऋषियों, मुनियों द्वारा बुद्धिमत्ता से जो ज्योतिर्मय मार्ग बनाए गये हैं उन मार्गों पर चलो और उनकी रक्षा करो। एक समय ऐसा भी था। जब 'लुप्त हुए सद्ग्रन्थ'–जब भारत के जन–मानस ने वेद–विहित मार्गों का अनुसरण छोड़ दिया तो वे अन्ध–विश्वासों की घास में विलीन हो गए। जिन्हें मानवता के उत्थान के लिए महर्षि दयानन्द सरीखे तपस्वियों ने पुनः खोज निकाला।

तीसरा उपाय है **'धिया कृतान्'** अर्थात् अपनी सद्बुद्धि से प्रेरित हो तुम ऐसे काम करो कि जिससे तुम्हारी कीर्ति बढ़े और अन्त में चौथा उपाय बताते हुए वेद–भगवान् कहते हैं **'अनुल्वण वयत जोगुवामपो'** अर्थात् दूसरों को शिक्षा देने से पूर्व पहले तुम स्वयं एक आदर्श स्थापित करो ताकि आगे चलकर समाज तुम्हारा अनुगमन कर सके। तभी हम सच्चे अर्थों में मनुष्य बन पाएँगे और परमात्मा की आदर्श सन्तान भी।

सच्चा इन्सान बनने की ललक एक गीत में दुहराई गई है–'न हिन्दू बनूँगा न मुसलमान बनूँगा। इन्सान की औलाद हूँ इन्सान बनूँगा'। यह 'इन्सान' बने रहना ही संस्कारों का प्रतिफल है जो प्रान्त होता है माँ से। माँ की चर्चा होते ही गृहस्थाश्रम का बोध होने लगता है और वहीं से आरंभ होता है परिवार।

वेद की उक्ति है–**'जीवेम् शरदः शतम्'** (यजुः 36/24) अर्थात् हे मानव! तुम सौ वर्ष पर्यन्त पूर्ण रूपेण सुख पूर्वक जियो और इस दीर्घ अवधि को बड़े ढंग से समान रूप से चार आश्रमों में बाँटा गया है–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। ब्रह्मचर्य में विद्या और ऊर्जा ग्रहण करो, गृहस्थ में परिवार की वृद्धि, वानप्रस्थ में धर्मानुसार मार्ग दर्शन और संन्यस्त होने पर आशीर्वाद का हाथ उठता है:–

न सा सभा यत्र सन्ति न वृद्धा,
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति,
न तत् सत्यं यच्छलेनाभ्युपेतम्।। –
महाभारत

और यह गृहाश्रम ही तो परिवार को संस्कार प्रदान करने का केंद्र बिन्दु है और चारों में श्रेष्ठ भी। मनुस्मृति के अनुसार :

यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्।।

अर्थात्! जैसे सब बड़े–बड़े नद और सागर में जाकर स्थिर होते हैं वैसे ही सब आश्रमी गृहस्थी ही को प्राप्त होकर स्थित होते हैं।

अब जब गृहस्थ अर्थात् परिवार की संरचना का इतना अधिक महत्त्व वेद और स्मृति में बखान किया गया है तो उस परिवार में माँ का स्थान सर्वोपरि माना गया है। **'माता निर्माता भवति'**–माँ निर्माण करती है क्या केवल संन्तान का। नहीं संस्कारित संन्तान का। निर्माण यात्रा में कितने अवरोध, कितने कष्ट उसे झेलते पड़ते हैं। वह चुपचाप झेल लेती है, सह लेती है। वह स्रोत है सर्जन और समर्पण का, अपूर्व सुख का। उस सुख की तुलना में संसार भर की सम्पदाएँ, सुविधाएँ सगम्य है। पुत्र का पालन करते हुए वह वंश–परम्परा को ही आगे बढ़ाती, सम्पूर्ण संस्कृति की सेवा करती है। एक विचारक के अनुसार यदि तारे आकाश की कविता है तो नारी धरती की। वह सृजन की चेतना है। संस्कार निर्माण उसका महानतम दायित्व है। सफल माँ वही होती है जो संन्तान को संस्कारी बनाती है, चरित्रवान् बनाती है। चरित्र सम्पन्न व्यक्ति ही समाज और राष्ट्र को गरिमा प्रदान करते हैं क्योंकि चरित्र जीवन में शासन करने वाला तत्त्व है और प्रतिभा से भी ऊपर। 'Character is the governing element of life and is above genius'। और चरित्रवान् बनने के लिए अनुशासन, विनम्रता, ईमानदारी और परोपकार की महती आवश्यकता है। असाधारण होती हैं वे माताएँ जो बच्चों का ठीक समय पर सही मार्ग दर्शन करती हैं।

महान् माता ही महान् आत्मा का आह्वान कर सकती है। कहा जाता है कि बालक माँ के पेट में ही सीखने लगता है। नेपोलियन, अभिमन्यु, वीर शिवाजी सरीखे कतिपय उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। माँ की जैसी वृत्तियाँ, भावनाएँ और सुझाव हों, वैसा ही शिशु का निर्माण होता है।

उत्तम संन्तान संस्कारों से ही बनती है। सम्भवतः इसी कारण महर्षि दयानन्द ने 'संस्कार विधि' के रूप में एक अद्भुत कृति की रचना की जिसमें मानव के सम्पूर्ण जीवन के सोलह संस्कारों की विशद व्याख्या है –

गर्भाद्या मृत्युपर्य्यन्ताः संस्काराः षोडशैव हि

ज्ञातव्य यह है कि प्रथम तीन संस्कार तो शिशु के जन्म से पूर्व के ही हैं–बस यहीं से 'संस्कारित सन्तति' के निर्माण का मंगलमय आरम्भ होता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दों में "शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं और संन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं, इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।"

अस्तु! हे गृहस्थ–कुल में जन्मे विद्वान! तू सन्तति–क्रम का विस्तार करता हुआ ज्ञान के प्रकाशक प्रभु का अनुगमन कर और बुद्धि से तू उनके बनाए गए मार्गों को प्रकाश से युक्त रख। उपदेष्टा जनों के कभी नष्ट न होने वाले सत्कर्म को कर। तू सदैव मननशील हो और दिव्य गुण वाला पुत्र व शिष्य तैयार कर।

परिवार में संस्कार की उदात्त स्थिति को बनाए रखने के लिए इतना ही कहना चाहूँगा कि घर की केन्द्र होती है माँ। उसके कोमल, सुघड़, हाथों के संस्पर्श से घर की हर वस्तु संगीतमय हो सकती है जब वह स्वयं संगीतमय हो, उसका जीवन लयबद्ध हो, सजग हो।

– **'वरेण्यम्', ए–1055, सुशांत लोक – I गुरुग्राम–122009 (हरियाणा)**

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

आनन्द भगवत् कथा

तीसरी बात यह है कि हमारी भक्ति "अनन्य भक्ति" नहीं होती। नाम तो प्रभु का रटा जा रहा है और वृत्ति कहीं और है। भक्ति तभी सफल होती है जब भक्त तन्मय हो जाये, अपनी सुध खो दे। आपको इस सम्बन्ध में एक सच्ची घटना सुनाता हूँ–

अकबर बादशाह दिनभर यात्रा करते–करते दूर निकल गये। चलते–चलते नमाज़ का समय हो गया। तब मार्ग में ही एक ओर नमाज़ का वस्त्र बिछाकर दो–ज़ानु हो गये। उधर एक नवयुवती अपने पतिदेव को खोजते आ रही थी। उसके पतिदेव प्रातः के गये घर लौटे नहीं थे। यह सच्ची देवी पति वियोग में उन्मत्त इधर–उधर दृष्टि डालती जा रही थी। अपने विचार मे निमग्न उसने नमाज़ का कपड़ा देखा नहीं और उसी के ऊपर पग रखती आगे बढ़ गई। अकबर को उसकी गुस्ताखी पर क्रोध तो आया परंतु चुप साधे रखी। थोड़ी ही देर में जब अपने पतिदेव के साथ युवती लौटी तो अकबर कहने लगा–"तुझे दिखा नहीं, मैं नमाज़ में, प्रभु–भक्ति में था? तुझे जाए– नमाज़ भी नज़र नहीं पड़ा, पग रखती चली गई?

युवती ने बड़े धैर्य से एक दोहा पढ़ा–

नर–राची सूझी नहीं, तुम कस लख्यो सुजान।
कुरान पढ़त बौरे भयो, नहिं राच्यो रहमान।।

"मैं तो अपने पतिदेव की खोज में गुम हो चुकी थी जिससे मुझे कुछ सूझा नहीं, परंतु तुम तो प्रभु–भजन में थे, मुझे कैसे देख लिया? मालूम होता है कि कुरान ही पढ़कर बौरा गये हो, भगवान् में अभी प्रीति नहीं हुई।"

अकबर यह उत्तर सुनकर अवाक् रह गया और बतलाया जाता है कि अकबर अक्सर लम्बा श्वास लेकर यही दोहा बार–बार दोहराया करता था। यदि ऐसे लोगों को कष्ट में देखा जाए तो फिर आश्चर्य क्यों?

–क्रमशः

शुद्धि के क्रान्तिवीर–स्वामी श्रद्धानन्द

● डॉ. विजेन्द्र पाल सिंह

23 दिसम्बर 1926 को स्वामी श्रद्धानन्द जी ने राजा राम सिंह को पत्र का उत्तर लिखवाते हुए लिखवाया कि अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधूरे कार्य को पूरा करूँ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी समझते थे कि भारत की एकता व अखण्डता के लिए शुद्धि आवश्यक है, शुद्धि से ही सम्पूर्ण भारत में समानता व शान्ति स्थापित हो सकती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने भी शुद्धि को महत्त्व दिया था। उस समय भारत में अनेक रियासतें थी, राजे रजवाड़े थे, उनके अपने अपने संविधान थे और अंग्रेज़ों का शासन था, उधर भारतीय समाज में चारों ओर अन्ध विश्वास पाखण्ड व कुरीतियाँ फैली हुई थी। सती प्रथा, मूर्ति पूजा, तांत्रिक कर्म व अनेक कुप्रथाओं से समाज रोग ग्रस्त था। अंग्रेज़ी मिशनरियाँ हिन्दुओं को मतान्तरित कर ईसाई बना रही थी। अंग्रेज़ी शिक्षा के मिशनरी स्कूल खोले जा रहे थे जिन्हें अंग्रेज़ी सरकार का पूरा सहयोग था अंग्रेज़ी संस्कृति को सर्वाधिक महत्त्व दिया जा रहा था। भारत में इस समय ऊँच–नीच, जातिवाद, छूआ–छूत का जनता में अधिक प्रभाव था, अंग्रेज़ों ने इन कमजोरियों का पूरा लाभ उठाया और हिन्दुओं को ईसाई बनाने में लग गए, ऐसे में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि के कार्य को महत्त्व दिया और शुद्धि के कार्य को ज़ोर–शोर से आँधी की भाँति चलाया। सन् 1923 में आगरा में हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की गयी जिसके प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी चुने गए। शुद्धि का कार्य तीव्र गति से चलने लगा उसी समय मलकाने राजपूतों की शुद्धि की गयी।

विदेशी लुटेरे मो. बिन कासिम, गौरी, गजनवी, शहअब्दाली, बाबर, अलाउद्दीन खिलजी, तुगलक आदि इस देश की खुशहाली देख अथाह धनसम्पत्ति, वैभव देख कर यहाँ लूटने आए थे। उन्होंने यहाँ लूटपाट की, खूनी ताण्डव किया जनता में रक्तपात किया और बलात्कार किए लोगों को तलवार के ज़ोर पर मतान्तरित किया, स्वर्ण जड़ित भवन व मन्दिरों को तोड़ कर सोना व चाँदी की मूर्तियों को लाद कर यहाँ से ले गए आज जो मुसलमान भारत में है विदेशियों की तलवार से ही मतान्तरित हुए और कुछ लोभ–लालच से बना दिए गए। पहले इन मुसलमानों में हिन्दुओं के ही सभी संस्कार होते थे और पर्व भी होली, दिवाली आदि उत्साह के साथ मनाए जाते थे, सभी एक पिता की संतान थी, एक हिन्दू व दूसरा मुसलमान था बहुतों ने कर (लगान) माफ कराने हेतु खान लगाना आरम्भ कर दिया था किसी गाँव में यदि गांव के कूएँ में चमड़ा निकल आया तो गांव में पानी पीने वालों ने अपने आप को मुसलमान समझ लिया। रोने पीटने लगे यह यहाँ की हिन्दू जनता का भोलापन अर्थात् अज्ञानता थी आज इसी अज्ञानता से पाकिस्तान, बंगलादेश बन गए यदि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि कार्य की आँधी न चलाई होती तो सबके ही सिर पर गोल टोपी होती ।

महाशय राजपाल, प. लेखराम जैसे क्रान्तिवीरों ने इस कार्य में अपने जीवन की आहुति दे दी।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के इस शुद्धि कार्य में अनेक आर्यों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। शुद्धि का कार्य चल रहा था। एक दिन एक मुस्लिम देवी असगरी बेगम अपने बच्चों के साथ आर्य समाज देहली आई और शुद्धि के लिए प्रर्थना की। असगरी बेगम की इच्छानुसार उस की शुद्धि की गई। उसका नाम असगरी बेगम से शान्ति देवी रख दिया गया। वह देवी देहली के बनिता आश्रम में रहने लगी पश्चात् उसका पिता व पति उसे ढूँढते वहां पहुँच गए और उससे पुनः मुसलमान होने को कहा तो शान्ति देवी ने पुनः मुसलमान बनने को मना कर दिया। उसके पति ने स्वामी जी व अन्यों के विरुद्ध मुकदमा कर दिया। खूब शोर–शराबा हुआ मुस्लिम अखबारों ने ज़हर उगलना शुरू कर दिया, परन्तु 2 दिसंम्बर 1923 को अदालत ने मुज़रिमों को बरी कर दिया।

23 दिसम्बर 1926 को राजा राम सिंह को पत्र लिखवाया कि अब तो दूसरा शरीर धारण कर ही शुद्धि के अधूरे कार्य को पूरा करुँगा।

23 दिसम्बर 1926 गुरुवार को सायं का समय था। एक नौजवान सीढ़ियों पर चढ़ कर आया। डॉक्टरों ने स्वामी जी के रोग ग्रस्त होने पर किसी को भी मिलने की पाबन्दी लगा रखी थी। सेवक ने रोका तो स्वामी जी ने बुला लिया उस व्यक्ति ने कहा मैं आपसे ईस्लाम पर वार्ता करना चाहता हूँ। स्वामी जी ने कहा भाई मैं अभी बीमार हूँ तुम्हारी दुआ से ठीक हो जाऊँगा तब वार्ता करुंगा इस नौजवान का नाम अब्दुल रशीद था। रशीद ने पानी मांगा, सेवक पानी लेने गया, उसने झट से स्वामी जी पर तीन फायर कर दिए, सेवक धर्म सिंह ने पकड़ने का प्रयत्न किया, उसको भी गोली मार दी। कातिल भागना चाहता था तभी स्वामी जी के सेक्रेटरी धर्मपाल विद्यालंकार ने उसे दबोच लिया (पकड़ लिया)। आधा घण्टे बाद पुलिस आई तब रशीद को पकड़ लिया गया। स्वामी जी की जीवन यात्रा गोली खाकर यहीं रुक गयी, शुद्धि का कार्य अधूरा रह गया।

आर्य समाज की डगर कोई आसान कार्य नहीं, क्योंकि स्थान–स्थान पर डगर–डगर पर काँटे बिछे हैं परन्तु आर्य समाज सदैव अपने कार्य में लगा रहेगा। ओ३म् का ध्वज् सदैव गगन मे लहराता रहेगा, वेद की ज्योति चारों दिशाओं में प्रकाश करती रहेगी, चाहे कितने ही प्राणों की आहुतियाँ क्यों न देनी पड़े हमारा उद्‌देश्य श्रेष्ठ समाज का निर्माण करना है, करते रहेंगे।

यही अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

गली नं. 2, चन्द्रलोक कालोनी,
खुर्जा 20131, मो. 8979794715

मंत्र उवाच

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

प्रातः कालीन मधुरिम वेला, प्रभु भक्ति के सर्वोत्तम क्षण, मन ने सोचा, कुछ ऐसा मिल जाए, ईश्वर की कृपा हो जाय कि प्रभु भक्ति ही आनन्दमयी हो जाए। इतना सोचना ही था कि एक पावन आध्यात्मिक विचार मन में उमड़ने–घुमड़ने लगा, मैं उसी विचार को ईश्वर कृपा का प्रतीक मान कर पूछ बैठा, "भगवन् मेरे मन में सात्विक विचारों के परिपोषक आप कौन हैं"?

"वत्स, मैं मंत्र हूँ। आत्मा को परमात्मा से मिलाने का सेतु।" अन्तरतम से एक मधुर स्वर उभरा! सुनकर मैं अत्यधिक प्रफुल्लित हो गया और भावों पर निमंत्रण न रख पाने के कारण पूछ बैठा, "भगवन्, आत्मा को परमात्मा से मिलाने के सामर्थ्य आपको कैसे प्राप्त हो गया?"

"वत्स, जिस मंत्र को शाश्वत ईश्वरीय वाणी कहा जाता है उसके प्रति शंका प्रकट करना क्या उचित है?"

"पर आपको भी प्रमाण देना होगा कि आप कैसे आत्मा और परमात्मा के बीच सेतु का काम करते हैं?"

"वत्स, कई बार मंत्र के माध्यम से भक्त भगवान से प्रार्थना करता है तो कई बार भगवान भक्त को संदेश देता है। उदाहरणार्थ गायत्री मंत्र में भक्त भगवान से सुबुद्धि की कामना करता है **'धियो यो नः प्रचोदयात्'** इसी प्रकार दूसरे मंत्र में भगवान भक्त को आदेश देता है –

"समानीव आकूतिः समाना
हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः
सुसहावति।।

इस मंत्र का अर्थ है–

हों विचार समान सबके चित्त मन
सब एक हों
ज्ञान देता हूँ बराबर, भोग्य पा सब
एक हों।।

भगवन्, यह कैसे पता चलता है कि किस मंत्र में भक्त भगवान से प्रार्थना कर रहा है और किस मंत्र में भगवान भक्त को आदेश दे रहे हैं?

"वत्स, संस्कृत में **'नः'** का अर्थ होता है–हमारा और **'वः'** का अर्थ होता है 'तुम्हारा' गायत्री मंत्र में **'नः'** का प्रयोग किया गया है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि भक्त भगवान से प्रार्थना करता है कि हे ईश्वर हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित कीजिए। दूसरे संगठन मंत्र में **'वः'** का प्रयोग किया गया है। इसका अभिप्राय यह है कि भगवान भक्त को आदेश दे रहे हैं कि तुम्हारे हृदय और विचार एक जैसे हों।"

"भगवान हमारे लिए इतना सब क्यों करता है?"

"जिस भगवान ने हमें उदर (पेट) दिया हैं क्या वह भोजन नहीं देगा? जिस ईश्वर ने हमें नेत्र दिए हैं क्या वह दृष्टि और दृश्य नहीं देगा? जिस प्रभु ने हमें सुंदर शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार आदि दिए हैं क्या वह उनके परिष्कार के लिए, मुक्ति के लिए वेद मंत्र नहीं देगा?

"आप मंत्र–मात्र तो बोले जा रहे हैं परन्तु 'मंत्र' का अर्थ क्या है? इस मंत्र में एक शब्द भी नहीं कहा।"

"वह भी सुन लो। मंत्र का अर्थ है–**'मननात् मंत्रः'** अर्थात् जिसका मनन किया जाय, उसे मंत्र कहते हैं। मंत्र का उच्चारण कर देना ही पर्याप्त नहीं है। उसका अर्थ भी जान लिया तो वह अधिक मंगलकारी होता है। आपने अंगूर के दाने चबाने के बजाय यदि उन्हें सीधे निगल लिया तो वे अधिक प्रभावकारी नहीं होंगे। परन्तु यदि आपने उन्हें चबा–चबा कर खाया तो आपको स्वाद का आनन्द तो

शेष पृष्ठ 07 पर

अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त के आधार पर

वेद में राष्ट्रभक्ति

● डॉ. अशोक आर्य

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इस कारण विश्व में जितने भी प्रकार का सत्य ज्ञान है, उस सब के दर्शन वेद में हमें मिलते हैं। इन सब प्रकार के ज्ञान–विज्ञान में देशभक्ति भी एक प्रमुख ज्ञान है। हमारे इस लेख का विषय भी देशभक्ति अथवा राष्ट्र–प्रेम ही है। जो व्यक्ति अपने देश से प्रेम नहीं करता, इसकी वृद्धि नहीं चाहता वह मनुष्य न होकर गन्दी नाली के कीड़े के समान है। अतः आओ हम अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त के आधार पर देश प्रेम को समझें। अथर्ववेद में इस सम्बन्ध में इस प्रकार प्रकाश डाला गया है :–

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।।

।। अथर्ववेद 12.1.1 ।।

मन्त्र का भाव है कि हम इस में बताई शक्तियों पर चलते हुए आगे बढ़ें तो निश्चय ही हमारा राष्ट्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहेगा। यह सात शक्तियाँ अवलोकनीय हैं :–

सात महाशक्तियाँ

किसी भी राष्ट्र के नव निर्माण के लिए उस देश के निवासियों में यह सात गुण वेद ने आवश्यक माने हैं। वेद कहता है कि देश की प्रगति केवल और केवल तब ही संभव है जब देशवासियों में :–

1. महान् सत्य

महान् सत्य नामक गुण का होना आवश्यक है। जिस देश में नागरिक असत्य पर चलेंगे, वहाँ लड़ाई–झगड़ा, कलह–क्लेश बना रहेगा क्योंकि असत्य आचरण होने के कारण कोई भी किसी दूसरे की बातों पर, योजनाओं पर, लेन–देन पर, शिक्षा–दीक्षा पर विशवास ही नहीं करेगा (यह स्थिति हम आज के नेताओं में खूब देख सकते हैं, जिन की अविश्वसनीय धारणा के ही कारण देश में प्रतिदिन कलह बढ़ती ही जा रही है और देश की स्वतंत्रता पर भी खतरा छाने लगा है।) इसलिए मन्त्र उपदेश करता है कि हे देश की उन्नति चाहने वाले नागरिको तथा देश के नेताओ ! सदा सत्य पर आचरण करो। यह ही उन्नति का श्रेष्ठ मार्ग है। इससे ही यह राष्ट्र आगे बढ़ पायेगा।

2. सत्य ज्ञान

सृष्टि के आरम्भ में चार उत्तम ऋषियों के माध्यम से मानव मात्र के कल्याण के लिए परमपिता परमात्मा ने हमें वेद का उत्कृष्ट ज्ञान दिया। ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण केवल यह वेद का ज्ञान ही सत्य ज्ञान है, अन्य जितने भी ज्ञान हैं, यदि वह इस ज्ञान से मेल खाते हैं तो सत्य हैं, अन्यथा गलत हैं, असत्य हैं। मन्त्र कहता है कि हमें सत्य ज्ञान का ही आचरण करना है। सत्य ज्ञान पर चलते हुए ही हम उन्नति करेंगे। हमारी उन्नति में ही राष्ट्र की उन्नति निहित है। अतः वेद का नित्य स्वाध्याय हमारे लिए अति आवश्यक है।

3. दृढ संकल्प

संकल्पहीन व्यक्ति की स्थिति सदा मुरादाबादी लोटे की भाँति डाँवाँडोल रहती है। उसको जो भी कोई व्यक्ति कुछ भी सुझाव देता है, मार्गदर्शन करता है, वह उसके अनुसार ही कार्य करने लगता है। इससे कभी कोई आदेश निकलता है और कभी कोई। इससे देश में अव्यवस्था फैल जाती है क्योंकि एक दिन एक आदेश आता है और दूसरे दिन उस आदेश के उल्टे कुछ और आदेश आ जाता है। इसलिए न केवल जनता अपितु राज नेताओं को भी अपने संकल्प पर कठोर व्रती होना आवश्यक हो जाता है। जब वह खूब सोच–विचार कर दृढ संकल्प हो कोई निर्णय लेंगे तो उसके कार्यान्वियन में कोई कठिनाई नहीं आएगी।

4. कर्त्तव्य परायणता

राष्ट्र के नवनिर्माण में कर्त्तव्य परयाणता का विशेष योग होता है। एक कर्त्तव्यहीन नागरिक अथवा नेता पूरे राष्ट्र को नरक की ओर धकेलने का कारण बनता है किन्तु कर्त्तव्यशील नागरिक अपने कर्त्तव्य को भली प्रकार जानता है और सदा इन्हें सम्मुख रखते हुए ही अपना प्रत्येक कार्य व्यवहार करता है। इससे देश निरंतर उन्नति पथ का पथिक बना रहता है।

5. तपस्वी वृत्ति

तप और स्वार्थ जीवन के दो पहलू हैं। जहाँ स्वार्थ देश में कटुता पैदा कर विनाश की ओर ले जाता है, वहाँ तपस्वी स्वभाव देश को उन्नति के मार्ग पर बनाए रखता है क्योंकि तपस्वी व्यक्ति को खाने, पहनने या फैशन की आवश्यकता नहीं होती। वह तो इस प्रकार के व्यय को अपव्यय मानता है। इससे देश की विपुल धन–सम्पत्ति बच जाती है, जिसे देश के नव–निर्माण के कार्यों में लगाया जा सकता है।

6. ज्ञान–विज्ञान की विद्वत्ता

अज्ञानी या अविद्वान् व्यक्ति अपनी मूर्खता के कारण बहुत से गलत कार्य कर जाता है, जिनका उसे ज्ञान ही नहीं होता। इससे न चाहते हुए भी देश का अत्यधिक अहित हो जाता है। इसलिए देश में ज्ञान–विज्ञान का खूब प्रचार होना आवश्यक है ताकि जो भी कार्य किया जाए उसका आरम्भ करने से पूर्व यह ज्ञानी लोग विचार–विमर्श कर इसी के गुण–दोष को जान सकें और जो उत्तम है, उसे ही व्यवहार में लाएँ।

7. सर्व कल्याण की भावना और परोपकार की वृत्ति

जब किसी भी राष्ट्र के प्रत्येक प्राणी में सर्वमंगल की वृत्ति होगी, वह

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

☞ पृष्ठ 06 का शेष

मंत्र उवाच

मिलेगा ही, साथ ही साथ स्वास्थ्य लाभ भी होगा। इसी प्रकार हमें मंत्र के शब्द, अर्थ और उसके मूल प्रतिपाद्य पर भी ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। यदि मंत्र का शब्द अंगूर का दाना है तो उसका अर्थ वह मधुर रस है जो आत्मा को ऊर्जा प्रदान करता है।"

"क्या मंत्र कुछ ही ब्राह्मण आदि की बपौती है या ये मानव मात्र के लिए उपयोगी हैं?

"जो मंत्र मानव मात्र के लिए उपयोगी हैं, उन्हें ब्राह्मणों तक सीमित रखना कौन सी बुद्धिमानी है? जो **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** का संदेश देते हों, **'वसुधैव कुटुम्मकम्'** का पाठ पढ़ाते हों, उन्हें जाति विशेष की धरोहर मान लेना, कहाँ तक उचित है। चाहे ब्राह्मण हो या शूद्र, नर हो या नारी, वेद मंत्र पढ़ने का अधिकार प्रत्येक को है।"

"मंत्रों का आदि स्रोत क्या है, ये मानव मात्र के लिए कैसे उपयोगी हो सकते हैं?

"यह तो पहले ही कहा जा चुका है कि मंत्र वेद–वाणी है और उनका आदि स्रोत है ईश्वर। जैसे अन्न शरीर का भोजन है वैसे ही मंत्र भी आत्मा का भोजन है। मंत्र जप करने से पाप वृत्ति वैसे ही नष्ट हो जाती है जैसे साबुन लगाने से कपड़ों का मैल। जैसे डंडे को देखकर बन्दर मनुष्य पर नहीं झपटते वैसे ही मंत्रोच्चारण में तल्लीन व्यक्ति के पास पाप या दुष्कृत्य नहीं फटकते।"

"यह कैसे सम्भव है?"

"इसके लिए पहले हमें मन के स्वभाव को समझना पड़ेगा। मन का काम है–चिन्तन, मनन या संकल्प–विकल्प। जब इस प्रकार के मन को मंत्रोच्चारण में लगा दिया जाय तो उसका भटकाव स्वयं समाप्त हो जायेगा। मन खाली रहेगा तो ख़ुराफात करेगा। यदि इसकी खुराफ़ात समाप्त हो गई तो यह इहलोक और परलोक दोनों की सिद्धि में सहायक हो जाएगा।"

"मंत्र व्यष्टि और समष्टि दोनों के लिए मंगलकारी हो, इसके लिए क्या आवश्यक है?"

"इसके लिए आवश्यक है–ईश्वर को जानना, समझना और पूर्ण समर्पण। जैसे बन्दर बाजीगर की रस्सी से बंधा रहता है, तभी वह नाचना, मटकना, कूदना आदि खेल दिखा पाता है उसी प्रकार यदि साधक भी ईश्वर की मंत्रात्मक रस्सी से बंधा रहे तो वह भी आध्यात्मिक क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकता है लेकिन जिसकी ईश्वर के प्रति रुचि न हो तो वेद भी उसका कुछ नहीं कर सकते। वेद मंत्र में कहा गया है–**'यस्तन्न वेद किं ऋचा तस्य करिष्यति'**

"ये वेदमंत्र जिन्हें हम ईश्वरीय वाणी कहते हैं, मानव मात्र तक कैसे पहुँचे?"

"जैसे चुम्बक के पास लोहा खुद ही खिंचा चला जाता है उसी प्रकार प्राचीन काल में चार ऋषि थे अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा। इन आदि ऋषियों का अन्तःस्थल अत्यन्त शुद्ध, पवित्र और सात्विक था। ये साधक थे। अतः इनके हृदय में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान प्रकट हुआ। प्रारम्भ में वैदिक ज्ञान श्रवण परम्परा से आगे बढ़ा, अतः इन्हें **'श्रुति'** भी कहा गया। इन वेदों में ज्ञान, उपासना, स्वास्थ्य, कृषि, विज्ञान, औषधी आदि का वर्णन किया गया है।"

"हे मंत्र देवता, आपने मेरे सभी प्रश्न का उत्तर तो दे दिया है लेकिन इसके बाद आप कहाँ जायेंगे?" मैंने अपनी जिज्ञासा प्रकट की।

"जाना कहाँ है? मैं तो तुम्हारे अन्तःस्थल में ही विलीन हो जाऊँगा। तुमने शब्दों के रूप में मुझे साकार किया, अब मैं अर्थ के रूप में निराकार होकर तुम्हारी आत्मा का ही अंग बन जाऊँगा। तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाऊँगा।"

"बहुत–बहुत धन्यवाद हे मंत्र देवता।" मैंने मंत्र देवता के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

230, आर्यवानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर, हरिद्वार,
मो. 9639149995

वैदिक शिक्षा की श्रेष्ठता

● पण्डित रघुनन्दन शर्मा

यद्यपि यह सत्य है कि वेद ज्ञान ईश्वरीय है और उसी के अनुसार मनुष्य का व्यवहार होना चाहिये, किन्तु हम देखते हैं कि आज संसार में नाना प्रकार की मनमानी सभ्यताओं को स्थिर करने के लिए प्रत्येक जाति के लोग अपने अपने बच्चों को नाना प्रकार की प्रवृत्ति वाली शिक्षा दे रहे हैं।

यदि उनसे कोई उन शिक्षाओं के विषय में यह पूछे कि आप लोग किस अधिकार से अपने बच्चों को इस प्रकार की शिक्षा देते हैं? तो वे सिवा इसके कि बच्चों को हमने पैदा किया है और पालन किया है, इसलिए हमको अधिकार है कि हम उनको अपनी रुचि के अनुसार अमुक रीति–नीति की शिक्षा दें और कोई दूसरा उत्तर नहीं है।

परन्तु यदि कोई फिर प्रश्न करे कि क्या बच्चों ने आपके पास कोई दरख्वास्त भेजी थी कि आप हमें पैदा कीजिये, पालिये और मनमाने ढंग की शिक्षा देकर अपनी रुचि का बना डालिये? तो सिवा इधर–उधर की बातें बनाने के और कोई उत्तर नहीं बन सकता।

इसलिए संसार की किसी जाति या मनुष्य को यह अधिकार नहीं है कि वह शिक्षा के नाम से, सभ्यता के नाम से और धर्म के नाम से अपने बच्चों को या संसार के किसी भी मनुष्य को अपनी रुचि के अनुसार अमुक रीति–नीति वाला बनाये।

क्योंकि शिक्षा की मनमानी नीति स्वीकार करने से–भविष्य सन्तान को केवल अपने मनोरंजन का खिलौना बनाने से – संसार में कभी सुख और शान्ति स्थापित नहीं हो सकती, अतएव शिक्षा पर धर्म प्रचार की नीति ऐसी होनी चाहिये जो संसार में किसी प्राणी के प्रतिकूल न हो। ऐसी शिक्षा वैदिक शिक्षा ही है, जो आदि सृष्टि में परमात्मा की ओर से प्राणीमात्र के सुख शान्ति के लिए दी गई है, अतः वही शिक्षा मनुष्य और अन्य प्राणि समुदाय की स्वाभाविक इच्छाओं के अनुकूल है।

स्रोत : वैदिक सम्पत्ति, जनज्ञान द्वितीय 1985 संस्करण, पृ. 648, प्रस्तुति : भावेश मेरजा,

महर्षि दयानन्द की कुछ उपयोगी बातें

● खुशहाल चन्द्र आर्य

1. जब मनुष्य उत्तम गुणों से युक्त होता है, तब सब लोग सब प्रकार से उसका सम्मान करते हैं।

2. जो जितना अपराध करे, उसको उतना दण्ड और जो जितना अच्छा काम करे, उसको उतना ही पारितोषिक देगा। अधिक या न्यून नहीं, चाहे माता–पिता भी क्यों न हो।

3. जब बुरे–बुराई नहीं छोड़ते तो भले भलाई क्यों छोड़े।

4. दुष्ट दुर्व्यसनों में फंस जाने से मर जाना अच्छा है।

5. अपने अंश को न छोड़े और पराये को कभी स्वीकार न करें।

6. हारे हुए शत्रु की प्रतिष्ठा कभी न करें, किंतु उसका यथायोग्य मान्य रखें। परंतु उसको छोड़कर स्वतंत्रता कदाचित न देवें। जैसे पृथ्वीराज चौहान ने, मोहम्मद गोरी को कई बार छोड़कर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी।

7. अपराध में जनता से राजपुरुषों पर अधिक दण्ड होना चाहिए। क्योंकि बकरी के प्रमाद रोकने से सिंह का प्रमाद रोकने में अधिक प्रयत्न होना उचित है।

8. सर्वदा संतानों की शिक्षा में धन का व्यय करें किंतु विवाह, मृत्यु आदि में न करें।

9. यह निश्चय है कि जैसा शील आचरण और पुरुषार्थ प्रधान पुरुष करता है, वैसा ही इतर जन वर्तते हैं।

10. जितना कुछ व्यवहार संसार में है, उसका आधार गृहस्थाश्रम है। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी तीन आश्रयों को दान और अन्नादि देकर प्रतिदिन गृहस्थ ही धारण करता है, इसीलिए गृहस्थ ज्येष्ठ व श्रेष्ठ आश्रम है।

11. विद्वानों का यही काम है कि सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग करके, परम् आनन्दित होते हैं। वे ही गुणग्राहक पुरुष विद्वान होकर धर्म, अधर्म, काम और मोक्ष रूप फलों को प्राप्त होकर प्रसन्न रहते हैं।

12. जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं, वैसे वेद भी सबके लिए सृष्टि के आदि में चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु आदित्य व अंगीरा थे उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद है। क्रमशः उच्चारित करवाये हैं। जिसको पढ़ने–पढ़ाने से कुछ भी न आए, वह निर्गुणि और मूर्ख होने से शूद्र कहलाता है। मनुष्य के तीन शत्रु होते हैं, प्रथम अज्ञान द्वितीय अन्याय तृतीय अभाव। इन तीन शत्रुओं को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने–अपने कार्यों से पराजित करते हैं। जो इन तीनो कार्यों को नहीं कर सकता उसको इन तीनों वर्णों की सेवा करने का भार सौंपा है जिससे ये तीनों वर्ण अपने–अपने कार्यों को आसानी से कर सकें। वैसे अन्य धार्मिक व सामाजिक कार्यों को करने का शूद्र को भी समान अधिकार है।

13. संसार में जितने दान हैं, अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथ्वी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृत आदि इन सब दानों में वेद विद्या का दान सर्वश्रेष्ठ है।

14. जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तभी तक राज्य बढ़ता है और जब दुष्टाचारी होते हैं, तब नष्ट–भ्रष्ट हो जाता है।

15. जो–जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ है, उनका सेवन कभी न करें, जैसे अनेक प्रकार के मद्य, भांग, गांजा, अफीम आदि।

16. जो मनुष्य नित्य प्रातः और सायं सन्ध्योपासना नहीं करता, उसको शूद्र कुल में रख देना चाहिए।

17. भारत की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसकी आध्यात्मिक निधि है, अतः सब कुछ खोकर भी उसकी रक्षा अनिवार्य है।

18. जिसके शरीर में वीर्य सुरक्षित रहता है, तब उसके आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़के बहुत सुख की प्राप्ति होती है।

19. वे माता और पिता अपनी संतानों के पूर्ण बैरी है, जिन्होंने इनको विद्या की प्राप्ति नहीं कराई।

20. जो आकाश के समान व्यापक सब देवों का देव परमेश्वर है, उसको जो मनुष्य न जानते न मानते और उसका ध्यान नहीं करते, वे नास्तिक, मन्दमति व सदा दुःख सागर में डूबे ही रहते हैं।

21. बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कार्यों के करने में अभय, निशंकता और आनन्दोत्साह उठता है, वह जीव को आत्मा की ओर से नहीं, परमात्मा की ओर से है।

22. यह निश्चय है कि जितनी विद्या और मत भूगोल में फैले हैं, वे सब आर्यावर्त देश से ही प्रचलित हैं।

23. ब्रह्मचर्य जो सब आश्रमों का मूल है, उसे ठीक–ठीक सुधारने से सब आश्रम सुगमय होते हैं और बिगड़ने से बिगड़ जाते हैं।

24. धर्म के नाम से बदला लेने की भावना अभद्र है।

25. परोपकार और परहित करते समय अथवा मान–अपमान और पराई निंदा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता।

26. जो मनुष्य जगत् का जितना उपकार करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा।

27. ''सुनने और प्रश्नोत्तर होने के पश्चात् सज्जनों को यही योग्य है कि सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करके स्वयं सदा आनन्दित होकर सबको आनन्दित किया करें।''

28. सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के अवलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हटते।

29. सीधा मार्ग वही होता है जिसमें सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना, पक्षपातरहित न्याय, धर्म का आचरण करना आदि है और इससे विपरीत का त्याग करना।

30. उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टांग योग से परमात्मा से समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यापी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिए काम करना होता है, वह सब करना चाहिए।

यह लेख मैंने अति उपयोगी व उत्तम समझकर श्री अत्तरसिंह जी आर्य क्रान्तिकारी (प्रधान हरियाण ा आदि युवक परिषद्) द्वारा लिखित **''महापुरुषों की दृष्टि में दयानन्द व महर्षि के सत्यउपदेश''** नामक शीर्षक पुस्तक से उद्घृत किया है। यह पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर महर्षि के समस्त विचारों को प्रकट करती है। इतनी उपयोगी पुस्तक को लिखने के लिए मैं ''श्रीक्रांतिकारी'' जी को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, साथ ही पाठकों से भी विनम्र निवेदन करता हूँ कि वे इस लेख को खूब मन लगाकर पढ़ें, ताकि मेरा तथा 'क्रान्तिकारी' जी का परिश्रम सफल हो सके।

180 महात्मा गाँधी रोड, दो तल्ला)
कोलकाता–700007
फोन : 22183825, मो. 8232025590

कश्मीर राज्य का इतिहास

● कृष्ण मोहन गोयल

कश्मीरी पंडित कश्मीरी हिंदू और बड़े सारस्वत ब्राह्मण समुदाय का हिस्सा हैं। वे कश्मीर घाटी के पंच गौड़ा ब्राह्मण समूहों से संबंधित हैं, जो भारतीय राज्य जम्मू और कश्मीर में एक पहाड़ी क्षेत्र है। कश्मीर पंडित मूल रूप से कश्मीर घाटी में रहते थे इससे पहले कि मुस्लिम प्रभावित इस क्षेत्र में प्रवेश कर गए जिसके बाद बड़ी संख्या में इस्लाम में परिवर्तित हो गए। वे कश्मीर के कुछ ही शेष कश्मीरी हिंदू समुदाय के मूल निवासी हैं।

तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास, अशोक के समय से ही कश्मीर क्षेत्र की हिंदू जाति व्यवस्था बौद्ध धर्म की आमद से प्रभावित थी और इसका नतीजा यह हुआ कि ब्राह्मणों के लिए वर्णाश्रम की परंपरागत पंक्तियों को छोड़ दिया गया इस संभावना से अलग। प्रारंभिक कश्मीरी समाज की उल्लेखनीय विशेषता उस उच्च संबंध में थी जिसमें महिलाओं को उस समय की अन्य समुदायों में उनकी स्थिति की तुलना में आयोजित किया गया था। एक ऐतिहासिक रूप से चुनाव लड़ने वाला क्षेत्र उत्तर भारत आठवीं शताब्दी से तुर्क और अरब शासन से हमला करने के अधीन था, लेकिन उन्होंने आमतौर पर पहाड़ की परिक्रमा करने वाली कश्मीर घाटी को कहीं और आसान पिकिंग के पक्ष में नजर अंदाज कर दिया। चौदहवीं शताब्दी तक यह नहीं था कि घाटी में मुस्लिम शासन अंततः स्थापित किया गया था और जब ऐसा हुआ, तो यह मुख्य रूप से आक्रमण के परिणामस्वरूप नहीं हुआ, क्योंकि आंतरिक समस्याओं के कारण हिन्दू लोहारा राजवंश में कमज़ोर शासन और भ्रष्टाचार के स्थानीय संकट से उत्पन्न हुआ था। मोहिबुल हसन ने इस पतन का वर्णन किया है।

दमरास शक्तिशाली हो गया, शाही को हरा दिया और लगातार विद्रोह से देश असमंजस में पड़ गया। जीवन और संपत्ति सुरक्षित नहीं थे, कृषि में गिरावट आई, और ऐसे समय थे जब व्यापार एक ठहराव पर आ गया। सामाजिक और नैतिक रूप से भी न्यायालय और देश ह्रास की गहराई में डूब गए थे।

अंतिम लोहारा राजा के शासनकाल के दौरान ब्राह्मणों के पास कुछ विशेष रूप से दुखी होना था। सुहादेव ने उन्हें अपनी कर प्रणाली में शामिल करने के लिए चुना, जबकि पहले उन्हें छूट दी गई प्रतीत होती है।

ज़ुल्जू, जो शायद तुर्किस्तान से मंगोल थे, ने 1320 में बेइंतहा तबाही मचाई थी जब उन्होंने कश्मीर घाटी के कई क्षेत्रों को जीतने वाली सेना की कमान संभाली थी। हालाँकि, ज़ुल्जू शायद मुस्लिम नहीं थी। कश्मीर के सातवें मुस्लिम शासक सुल्तान सिकंदर बटशिकन (1389–1413) की कार्रवाइयाँ जहाँ इस क्षेत्र के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं। कई गैर–मुस्लिम धार्मिक प्रतीकों को नष्ट करने और जिस तरह से उन्होंने आबादी को कवर करने या पलायन करने के लिए मज़बूर किया, उसके कारण सुल्तान को एक इकोनॉस्टल के रूप में संदर्भित किया गया है। पारंपरिक धर्मों के बहुत से अनुयायी, जो इस्लाम में परिवर्तित नहीं हुए, भारत के अन्य हिस्सों में चले गए। प्रवासियों में कुछ पंडित शामिल थे, हालांकि यह संभव है कि इस समुदाय के कुछ लोग आर्थिक कारणों से उतने ही दूर रहे जितना कि गए शासकों से बच गए। ब्राह्मण उस समय आम तौर पर शासकों द्वारा समुदाय के पारंपरिक रूप से उच्च साक्षरता और सामान्य शिक्षा का उपयोग करने के लिए अन्य क्षेत्रों में भूमि की पेशकश की जा रही थी, साथ ही संघ द्वारा उन्हें वैधता प्रदान की गई थी। इस बदलाव का परिणाम जनसंख्या और धर्म दोनों में और धर्म में यह था कि कश्मीर घाटी मुख्यतः मुस्लिम क्षेत्र बन गया।

बटशिकन का उत्तराधिकारी, कट्टर मुस्लिम जैन–उल–अबिदीन (1423–74) हिंदुओं के प्रति सहिष्णु था, जो हिंदू धर्म में जबरन धर्म परिवर्तन करने के साथ–साथ उन लोगों की हिन्दू धर्म मे वापसी को मंजूरी देने के साथ–साथ मुस्लिम बहाली में शामिल हो गए थे।

मंदिरों। उन्होंने इन पंडितों की शिक्षा का सम्मान किया, जिनके लिए उन्होंने भूमि दी और साथ ही उन लोगों को प्रोत्साहित किया, जिन्होंने लौटने के लिए छोड़ दिया था। उन्होंने एक योग्यता का संचालन किया और ब्राह्मण और बौद्ध दोनों उनके निकटतम सलाहकार थे।

1857 ई. में अकबर ने कश्मीर पर विजय प्राप्त की। उनके मुगल शासन के दौरान हिन्दुओं ने व्यक्तिगत और संपत्ति की सुरक्षा का आनंद लिया और उन्हें उच्च सरकारी पद आवंटित किए गए। यह वह था जिसने उनकी बुद्धिमता से प्रसन्न होकर उन्हें उपनाम पंडित दिया। मुगलों के शासन के बाद आफतों का शासन था। धीरे–धीरे कश्मीरी पंडितो की एक छोटी आबादी को छोड़कर कई कश्मीरियों ने इस्लाम में धर्म परिवर्तन किया, जिन्होंने अभी भी शैव धर्म का पालन किया है। हिंदू धर्म में धर्मान्तरित लोगों को वापस जीतने के लिए बहुत कुछ नहीं किया गया था। बहुसंख्यक, हालांकि अभी भी जम्मू और कश्मीर में हिंदू बने हुए हैं।

कश्मीरी ब्राह्मणों ने खुद को भारत के उत्तरी क्षेत्र में स्थापित किया, पहले राजपूत और मुगल दरबार में और फिर कश्मीर के डोगरा शासकों की सेवा में। यह सामंजस्यपूर्ण समुदाय, अत्यधिक साक्षर और सामाजिक रूप से अभिजात वर्ग, सामाजिक सुधारों पर चर्चा करने और लागू करने वाले पहले लोगों में से एक थे।

113 कोटा बाज़ार, अमरोहा–244221
मो. 7727069104

☞ पृष्ठ 07 का शेष

वेद में राष्ट्रभक्ति

सब के कल्याण की सदा इच्छा करेगा तो निश्चय ही उसके अन्दर दूसरों की सहायता की भावना बलवती होगी। इस दूसरों की सहायता को ही परोपकर कहते हैं। जब मानव में परोपकार की वृत्ति आ जाती है तो वह स्वार्थ की ओर कभी देखता ही नहीं। इस प्रकार से की गई सेवा को निष्काम सेवा भी कहते हैं। जब मानव निष्काम सेवा करने लगता है तो वह अपनी उन्नति की चिंता के स्थान पर दूसरों की उन्नति के लिए कार्य करता है। इसे ही सर्वमंगल, सर्वकल्याण की भावना कहते हैं। जब वह इस भावना से काम करता है तो इसे परोपकार कहते हैं। जब नागरिक परोपकारी है तो राष्ट्र को उन्नत होना निश्चित हो जाता है।

जब देश के नागरिकों में यह सात महाशक्तियाँ आ जाती हैं, नागरिक इन महाशक्तियों के गुण–दोष समझने लगते हैं तथा इनके गुणों के अनुरूप ही कार्य करते हैं तो राष्ट्र इतनी तीव्र गति से आगे बढ़ता है कि विश्व के अन्य देशों में इस देश की यश और कीर्ति फैल जाती है और यह राष्ट्र बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

मातृभूमि हमें विस्तृत प्रकाश दे

मन्त्र के इस दूसरे भाग में बताया गया है कि हमारी मातृभूमि हमारे भूतकाल के उत्तम अनुभवों को संभालती है और हमारे इन कार्यों के आधार पर हमारे भविष्य को बनाने का कार्य करती है। इसलिए मन्त्र उपदेश करता है कि हमारी मातृभूमि हमें अत्यधिक विस्तार वाला स्थान हमारे हितसाधन के लिए दे और यह हित प्रकाश के बिना संभव नहीं इसलिए हमें ज्ञान का प्रकाश भी दे। इस तथ्य को समझने के लिए हम एक बार फिर सात महाशक्तियों को देखते हैं। यह शक्तियाँ जिस राष्ट्र के नागरिकों के जीवन का अंग बन जाती हैं, वह राष्ट्र सदा स्थायी रूप में रहता है, उन्नति पथ पर आगे बढ़ता चला जाता है। इसमें सदा खुशहाली ही निवास करती है। किसी को कभी भी कोई दुःख–कष्ट–क्लेश नहीं होता।

हमारा संकल्प

मन्त्र के इस भाग में नागरिकों के लिए एक संकल्प लेने को भी कहा गया है। नागरिक संकल्प लेते हुए, प्रतिज्ञा करते हुए कहते हैं कि हे मातृभूमि! हम इस देश के नागरिक ऊपर दिए सातों महाशक्तियों को धारण करने का संकल्प लेते हैं कि हम, तेरे लिए इन सातों गुणों से संपन्न होकर तेरी रक्षा करने के लिए सदा तैयार हैं। तेरे अन्दर भूतकाल के पदार्थ गड़े हुए हैं, वर्तमान का सब कुछ तेरे पास उपलब्ध है तथा भविष्य बनाने के लिए भी तु नित्य उत्सर्जन कर रही है। तु इन तीनों कालों के सब के सब पदार्थों का उत्तम प्रकार से पोषण करने में समर्थ है। सातों गुणों को धारण करने के कारण हम इन पोषक तत्त्वों को बनाए रखने के लिए सदा अपने जीवन को लगाए रखेंगे।

पाकेट 1/61 प्रथम तल रामप्रस्थ ग्रीन
सेक्टर 7 वैशाली–201012
गाजियाबाद, उ. प्र. भारत
चलभाष 9354845426

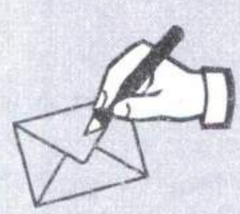

पत्र/कविता

एन.आर.सी. की आवश्यकता नहीं रहेगी

आर.आर.एस. प्रमुख श्री मोहन भागवत जी का यह वक्तव्य कि भारत में रहने वाले सभी 130 करोड़ लोगों को वे हिन्दू मानते हैं आर.आर.एस. इसमें पूरा विश्वास रखता है चाहे लोगों की उपासना पद्धति अलग–अलग हो और अलग–अलग मतावलम्बी हों का हम स्वागत करते हैं। इससे एन.आर.सी. की जरूरत ही नहीं रहेगी।

इसी कड़ी में हम एक बात और जोड़ना चाहते हैं वह यह कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य व आर्यावर्त की बात की है। आर्यावर्त तो ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बंगलादेश, वर्मा, मलेशिया, थाईलैंड, श्रीलंका आदि से समाहित भूखण्ड है अतः इस भूखण्ड में रहनेवाले सभी को आर्य मानकर आर्यावर्त को या आर्यावर्त संघ को बनाने की जरूरत है या फिर भारत संघ ही बने। न कि सी.ए.ए आदि से और सिकुड़ते जाएँ।

प्रो. विट्ठल राव आर्य
मंत्री आर्य समाज
सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना

****

भ्रूणहत्या

करुणा की किलकारी माँ,
ममतालू महतारी माँ।
दया–कृपा की झारी माँ,
समता की फुलवारी माँ।।

मै तेरे आंगन की तुलसी, मेरे हाथ कटारी माँ।
जन्म–पूर्व ही मार दिया क्यों बोल अरी हत्यारी माँ।।

माँ का तूने अर्थ न जाना,
पाखण्डों को व्यर्थ न जाना।
पाप–कर्म असमर्थ न जाना,
अपना दूध समर्थ न जाना।।

पाप–जाप होता है जग में पर्वत से भी भारी माँ।
जन्म–पूर्व ही मार दिया क्यों बोल अरी हत्यारी माँ?

मैं ही तेरा वंश बचाती,
जाने कितने वंश बचाती।
मैं रहती निर्वंश न जाती,
निज अंगुली पर कंस नचाती।।

अब है तेरा कौन जगत् मे ओ किस्मत की मारी माँ।
जन्म–पूर्व ही मार दिया क्यों बोल अरी हत्यारी माँ?

सिर दुखता तो दवा लगाती,
तेल चुपड़ती केश बनाती।
जाग–जागकर तुझे सुलाती,
मैं तेरी छाया बन जाती।।

तुतलाती बातों से हरती तेरी हर बीमारी माँ।
जन्म–पूर्व ही मार दिया क्यों बोल अरी हत्यारी माँ?

तेरा चौका–बर्तन करती,
एक टांग पर नर्तन करती।
अर्चन करती पूजन करती,
तेरा सुख संवर्धन करती।।

तेरी प्रबल प्यास की खातिर मैं बनती पनिहारी माँ।
जन्म–पूर्व ही मार दिया क्यों बोल अरी हत्यारी माँ?

अगर सिंहनी सी तन जाती,
मां काली–दुर्गा बन जाती।
अगर युद्ध सी तू ठन जाती,
तेरी कोख न यों छन जाती।।

कौन छेड़ता भ्रूण तुम्हारा करती सिंह सवारी माँ।
जन्म–पूर्व ही मार दिया क्यों बोल अरी हत्यारी माँ?

मां बच्चों के प्राण बचाती,
उन्हें जिलाकर खुद मर जाती।
आशीषों की झड़ी लगाती,
अपने मुख का कौर खिलाती।।

चाकू–कैंची–सुई–कुल्हाड़ी, क्या–क्या मुझे न मारी माँ।
जन्म–पूर्व ही मार दिया क्यों बोल अरी हत्यारी माँ?

डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी
ए–1/12–13, सै. 11 रोहिणी, दिल्ली, मो.9810835335

हिंदी नौकरानी है, अब भी

आज विश्व हिंदी दिवस है लेकिन क्या हिंदी को हम विश्व भाषा कह सकते हैं ? हां, यदि खुद को खुश करना चाहें या अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना चाहें तो जरुर कह सकते हैं, क्योंकि यह दुनिया के लगभग पौने दो सौ विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है (इनमें भारत के भी हैं), दुनिया के लगभग आधा दर्जन प्रवासी भारतीयों के देशों में किसी न किसी रुप में यह बोली और समझी जाती है और कई देशों में विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित होता रहा है। 1975 में प्रथम बार यह नागपुर में आयोजित हुआ है। लगभग 50 साल इस विश्व हिंदी सम्मेलन को आयोजित होते हुए हो गए लेकिन हिंदी की दशा आज भी भारत में नौकरानी की है। अंग्रेज़ी आज भी भारत की महारानी है और हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएं उसकी नौकरानियां हैं। देश में कांग्रेस और विरोधी दलों की इतनी सरकारें पिछले 72 साल में बनी लेकिन किसी प्रधानमंत्री की हिम्मत नहीं पड़ी कि इस अंग्रेज़ी महारानी को उसके सिंहासन से नीचे उतारे। वर्तमान सरकार 2014 में हम इसीलिए लाए थे। उनके लिए हमने अपना सारा अस्तित्व और संबंध दांव पर लगा दिए थे लेकिन इन पिछले साढ़े पांच वर्षों में हुआ क्या ? सिर्फ संयुक्तराष्ट्र में हिंदी का भाषण सरकार द्वारा पढ़ दिया बाकी हर जगह आपको हिंदी वैसी ही पायदान पर बैठी मिलेगी, जैसी वह लॉर्ड मैकाले के जमाने में बैठी हुई थी। कानून, चिकित्सा, इंजीनियरी, अंतरराष्ट्रीय राजनीति आदि किसी विषय की उच्च शिक्षा हिंदी या किसी अन्य भारतीय भाषा में नहीं होती न कोई शोध होता है। सरकार के फैसले, संसद के कानून, अदालतों के फैसले, मरीज़ों का इलाज– ये सब काम अंग्रेज़ी में होते हैं। देश का ठगी का यह सबसे बड़ा कारोबार है। मैं अंग्रेज़ी या किसी विदेशी भाषा को स्वेच्छ पढ़ने–पढ़ाने का पूर्ण समर्थक हूं लेकिन जब तक स्वभाषा में काम नहीं होगा, यह भारत एक नकलची, फिसड्डी और पिछलग्गू देश बना रहेगा। हम हिंदी को विश्व भाषा तो जरुर कहते हैं लेकिन हमें यह कहते हुए जरा भी शर्म नहीं आती कि भारत के प्रांतों के बराबर जो देश हैं उनकी भाषाएं तो संयुक्त राष्ट्र संघ में मान्य है और हिंदी को वहां घुसने की भी इजाजत नहीं है।

डॉ. वेद प्रताप वैदिक
dr.vaidic@gmail.com

****

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी में विशेष यज्ञ तथा भजन संध्या

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी में विशेष यज्ञ एवं भजन संध्या का आयोजन किया गया।

यज्ञ से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। इसमें आश्रम प्रबंधक, स्टॉफ, समस्त विद्यार्थी, स्थानीय आर्य समाजों के प्रधान पं. सतीश शर्मा, एकवोकेट, श्री मनोज आर्य, श्रीमती स्वर्ण चावला, भजन उपदेश श्री विजय आनन्द एवं स्थानीय देवीयों सज्जनों की उपस्थिति रही। सभी गणमान्य सज्जनों ने क्रमशः पवित्र यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की।

भजन संध्या भजन उपदेशक श्री विजय आनन्द एवं आश्रम की छात्राओं ने एक से बढ़कर एक सुन्दर वैदिक भजन, प्रस्तुत कर वातावरण को भक्तिमय एवं आनन्दमय बना दिया। उपदेशक ने विद्यार्थियों को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बारे में विस्तार पूर्वक बताते हुए कहा कि हमें भी उनके बताए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

प्रबंधक महोदया ने सभी का धन्यवाद करते हुए बताया की महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सन् 1877 में स्थापित यह आश्रम 142 वर्षों से अनाथ, गरीब, बेसहारा बच्चों के जीवन को सवांरकर राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ चुका है।

अन्त में डॉ. सतनाम कौर ने आर्य रत्न माननीय श्री पूनम सूरी, पद्म श्री सम्मान से अलंकृत, प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा अन्य पदाधिकारियों का धन्यवाद किया जिनके आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से यह आश्रम प्रगति पथ पर निरन्तर अग्रसर है। शांति पाठ व परमपिता परमेश्वर के आशीर्वाद स्वरूप प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, खन्ना में मनाया गया 25वां वार्षिक समारोह

डी.ए.वी. पब्लिक सी सै स्कूल खन्ना में 25वां वार्षिक समारोह आगाज 2019 बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया। डीएवी मैनेज़िग समिति दिल्ली के कोषाध्यक्ष डां. एम सी शर्मा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे और विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रबंधक, श्रीमती अजय सरीन, प्रधानाचार्या हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर उपस्थित रहीं। समारोह का आरंभ डी.ए.वी. गान से हुआ। ज्योति प्रज्ज्वलन की रस्म अदा करने के पश्चात् विद्यालय की प्रिंसिपल अनुजा भारद्वाज ने मुख्यातिथि और अन्य अतिथियों का स्वागत किया और विद्यालय की गतिविधियों एवं विद्यार्थियों की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए वार्षिक रिपोर्ट पेश की। सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरूआत सरस्वती वंदना से की गई। विद्यालय के विद्यार्थियों ने स्वामी दयानंद सरस्वती जी की जीवन गाथा, भजन, पानी बचाओ, धरती बचाओ, योगा, देश भक्ति के गीत आदि प्रस्तुत कर सबके मन को मोह लिया।

मुख्य डॉ. एम सी शर्मा जी और प्रबंधक श्रीमती अजय सरीन द्वारा विद्यालय के शैक्षिक श्रेत्र में सफलता प्राप्त करने वाले विद्यर्थियों और प्रतिभावान् सदस्यों को भी सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. एम. सी. शर्मा जी ने प्रधानाचार्य एवं स्टॉफ के कार्यों एवं विद्यालय के उज्ज्जवल भविष्य की कामना की। प्रबंधक श्रीमती अजय सरीन ने भी प्रिंसीपल अनुजा भारद्वाज की एक अच्छे प्रबंधक के रूप में प्रशंसा करते हुए इस 25वें वार्षिक समारोह की बधाई दी। इस अवसर पर एल. एम. सी. के सदस्य और शहर के गणमान्य उपस्थित हुए। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

डी.ए.वी. कोंट रोड़, भिवानी में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आयोजित

डी.ए.वी. विद्यालय भिवानी के प्रांगण में वैदिक बहुत ही श्रद्धा व भाव के साथ श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। मुख्य वक्ताओं के रूप में विद्यालय के वाइस चैयरमेन सत्यपाल आर्य व विद्यालय मैनेजर अजय अलावादी ने शिरकत की। इस अवसर पर विद्यालय में हवन, भजन व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

स्वामी श्रद्धानन्द को 20वीं सदी का चमत्कारी व प्रेरक व्यक्तित्व बताते हुए विद्यालय के मैनेजर अजय अलावादी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती भारत के शिक्षाविद, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा आर्यसमाज के संन्यासी थे जिन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार किया।

स्वामी श्रद्धानंद के राजनैतिक व सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए विद्यालय के वाइस चेयरमैन सत्यपाल आर्य जी ने कहा कि उनका राजनैतिक जीवन रोलेट एक्ट का विरोध करते हुए एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में प्रारम्भ हुआ। अच्छी-खासी वकालत की कमाई छोड़कर स्वामीजी ने "दैनिक विजय" नामक समाचार-पत्र में "छाती पर पिस्तौल" नामक क्रान्तिकारी लेख लिखे । स्वामीजी महात्मा गांधी के सत्याग्रह से प्रभावित थे । जालियांवाला बाग हत्याकाण्ड तथा रोलेट एक्ट का विरोध वे हिंसा से करने में कोई बुराई नहीं समझते थे ।

विद्यालय की प्राचार्या जगदीप कौर ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने दलितों की भलाई के कार्य को निडर होकर आगे बढ़ाया, साथ ही कांग्रेस के स्वाधीनता आंदोलन का बढ़-चढ़कर नेतृत्व भी किया। वे ऐसे महान् युगचेता महापुरुष थे, जिन्होंने समाज के हर वर्ग में जनचेतना जगाने का कार्य किया। इस महात्मा की एक व्यक्ति ने 23 दिसम्बर, 1926 को चांदनी चौक, दिल्ली में गोली मारकर हत्या कर दी। इस तरह धर्म, देश, संस्कृति, शिक्षा और दलितों का उत्थान करने वाला यह युगधर्मी महापुरुष सदा के लिए अमर हो गया।

☞ *पृष्ठ 01 का शेष*

डी.ए.वी. बी.एस.ई.बी. पटना में मनाया ...

महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, विद्युत बोर्ड, बिहार सरकार ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी।

तीसरा दिन यज्ञ – हवन के साथ आरंभ हुआ । बच्चों के परिधान एवं साज-सज्जा से वैदिक संस्कृति पूर्णतः साकार हो उठी थी। बच्चों की हवन विधि को देखकर दर्शक भाव विभोर हो रहे थे। इस बीच निर्णायक मंडली द्वारा प्रदर्शन के आधार पर सतत् मूल्यांकन प्रक्रिया भी जारी रही। भजन, प्रवचन, बौद्धिक परिचर्चा, एवं प्रतियोगिताओं का दौर चलता रहा। 'डायरी लेखन' के रूप में समस्त कार्यक्रम को रूपायित करने की अनोखी प्रतियोगिता में भाग लेकर बच्चों ने अपने स्तर की बौद्धिक परिपक्वता का परिचय दिया।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 15/16-01-2020

डी.ए.वी. पटेल नगर (दिल्ली) में हुआ ग्यारह कुण्डीय हवन

डी. स्वामी श्रद्धानंद को श्रद्धांजलि देने हेतु डीएवी स्कूल पश्चिम पटेल नगर में ग्यारह कुण्डीय हवन का आयोजन किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान डी.ए.वी. कमेटी के कोषाध्यक्ष महेश चोपड़ा, पाठशाला के चेयरमैन अजय सूरी, मैनेजर, शशी प्रभा चांदला, डॉ. धमेन्द्र एवं प्रधानाचार्या रश्मि गुप्ता थे। अन्य डी.ए.वी. विद्यालयों के प्रिंसीपल तथा अन्य गणमान्य अतिथि भी उपस्थित थे। सबका स्वागत परंपरागत ढंग से किया गया।

पाठशाला का प्रांगण ओ३म् के झंडों तथा श्रद्धानंद जी के जीवन संबंधित मुख्य घटनाओं को चित्रों द्वारा चित्रित करके बड़े सुन्दर एवं आर्कषक ढंग से सजाया गया था। ग्यारह हवन कुण्डों के पास आचार्य जी, मुख्य यजमान, अध्यापिका तथा कक्षाओं के बच्चे तथा उनके अभिभावक गण बैठे हुए थे। हवन कुण्डों में जलती हुई अग्नि, मंत्रों का स्वर, स्वाहा का स्वर वातावरण में शुद्धता एवं पवित्रता का संचार कर रहा था। हवन–यज्ञ के समापन पर पाठशाला के बच्चों ने स्वागत नृत्य किया तथा श्रद्धानन्द जी के त्याग, बलिदान एवं कार्यों को याद करते हुए एक सामूहिक गीत गाया तथा एक बच्चों ने भजन प्रस्तुत किया।

पाठशाला के चेयरमैन अजय सूरी ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए श्रद्धानंद जी के बारे में मुख्य बातें बताते हुए बताया कि उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके आर्यसमाज तथा वैदिक संस्कारों का पूरे जगत् में प्रसार किया। स्वामी जी गुणों की खान थे तथा धर्म के वास्ते देश पर कुर्बान हो गये। डॉ धमेन्द्र जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के साथ–साथ गुरुदत्त विद्यार्थी के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा हिन्दू धर्म में नमस्ते का महत्त्व बताया। मैनेजर मैडम ने सबका धन्यवाद किया।

कार्यक्रम के समापन पर ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। सभी बच्चों एवं अभिभावकों ने बड़ी श्रद्धा ने लंगर प्रसाद बैठकर खाया तथा सब ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, वेलचेरी, चेन्नई में संयुक्त राष्ट्र दिवस का आयोजन

डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, चेन्नई में 'संयुक्त राष्ट्र दिवस' का उत्सव को धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम के द्वारा विद्यालय ने संयुक्त राष्ट्र की महत्ता पर प्रकाश डाला। साथ ही संयुक्त राष्ट्र की गति एवं उसकी सार्थकता से अवगत करवाया।

छात्र–छात्राओं ने यू. एन. ओ. की स्थापना एवं कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संयुक्त राष्ट्र ने 2019 को देशज भाषाओं के संरक्षण का वर्ष घोषित किया, जिसके माध्यम से सभी देशों की देशज भाषाओं के संरक्षण पर जोर दिया। इसी संबंध में दो एंकरों ने एक कुलीन पैनल के साथ चर्चा की, जिसमें युनेस्को के कार्यकारी बोर्ड के सदस्य शामिल थे। उन्होंने दुनिया और भारत में विभिन्न भाषाओं की स्थिति और लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण पर सरकार द्वारा उठाए गए कदमों पर चर्चा की।

पर्यावरण संरक्षण में भारत की भूमिका पर यू. एन. ई. पी. के भारतीय प्रतिनिधि के साथ एक अनौपचारिक साक्षात्कार लिया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण सन् 1966 में संयुक्त राष्ट्र आम सभा में एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के गीत 'मैत्री भजत' का गायन था।

कक्षा आठवीं के विद्यार्थी एस. श्री स्मृति द्वारा गीत प्रस्तुति, सी. चारुलता द्वारा वीणावादन एवं जी. श्रीकांत द्वारा मृदंगवादन ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ा दी। इस गीत ने विश्व शांति का संदेश देते हुए पूरे वातावरण को मंत्रमुग्ध कर दिया। सभी दर्शकों ने इस मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम का आनंद लिया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

डी.ए.वी. मलोट में यज्ञ एवं खेल महोत्सव

डी. ए.वी. एडवर्ड गंज सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल मलोट द्वारा आर्य समाज के महान् सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस विद्यालय के प्रांगण में यज्ञ एवं खेल महोत्सव कर श्रद्धा व धूम–धाम के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कृष्ण कुमार छाबड़ा जी ने की।

इस अवसर पर धर्माचार्य राम चंद्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ कर स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इलाके की सुख, समृद्धि, शांति एवं प्रेम व भाईचारे के साथ एक साथ मिलजुल कर रहने की प्रार्थना की गई। मुख्य यजमान की भूमिका विद्यालय के प्राचार्या श्रीमती संध्या बठला ने निभाई।

ध्वज फहरा कर खेल प्रतियोगिता का प्रारंभ किया गया। प्राचार्य श्रीमती संध्या बठला ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं अभिभावकों का स्वागत करते हुए कहा कि आर्य समाज के महान् नेता एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के संस्थापक स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में यह खेल प्रतियोगिता करवाई जा रही है। इसका मुख्य मकसद स्वामी जी की विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाना है।

श्री कृष्ण कुमार छाबड़ा जी ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल भावना के साथ खेलते हुए आगे बढ़ना चाहिए। विद्यालय शिक्षा के साथ–साथ खेलों में भी राष्ट्रीय स्तर पर मलोट का नाम रोशन कर रहा है। तत्पश्चात् दूसरी कक्षा से लेकर पांचवी कक्षा तक के सभी विद्यार्थियों की विभिन्न प्रकार की दौड़ एवं फन गेम्स करवाए गए।

प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अतिथियों द्वारा मेडल पहनाकर उत्साहवर्धन किया गया। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत ड्रिल, मार्च पास्ट, गिद्दा, गीत, नेल आर्ट, टैटू, मेहंदी और कोरियोग्राफी विशेष आकर्षण का केंद्र रही। जिसकी सभी अतिथियों और अभिभावकों ने विद्यार्थियों की प्रशंसा की तथा उत्साह वर्धन किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**